ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

कार्तिक-मार्गशीर्ष संवत् नानकशाही ५५६ नवंबर 2024 वर्ष १८ अंक ३

गुरुद्वारा तपिआणा साहिब, नामदेव नगर,
घुमाण, ज़िला गुरदासपुर

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

कार्तिक-मार्गशीष संवत् नानकशाही 556
वर्ष 18 अंक 3 नवंबर 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
उच्चतम मानव-मूल्यों के पोषक : श्री गुरु नानक देव जी 7
-डॉ. मनजीत कौर
बंदी छोड़ दिवस की ऐतिहासिकता एवं महानता 11
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
नामे हरि का दरसनु भइआ।। 16
-डॉ. सत्येन्द्रपाल सिंघ
बाबा दीप सिंघ जी शहीद तलवंडी साबों से श्री अमृतसर साहिब तक 21
- स. सिमरजीत सिंघ
नवंबर १९८४ के सिक्ख कत्ल-ए-आम का दर्दनाक वृत्तांत 24
-डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ
बर्बरता में कोई किसी से कम नहीं ! 3०
-डॉ. महीप सिंघ
सिक्खी के प्रचार और प्रसार में धर्म प्रचार कमेटी का योगदान 34
-स. बलविंदर सिंघ काहलवां
अकाली मोर्चे : सैद्धांतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 39
-सतविंदर सिंघ फूलपुर
श्री गुरु नानक देव जी (कविता) 46
-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी
खबरनामा 47

गुरबाणी विचार

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में मार्गशीर्ष महीने में ऋतु और वातावरण के विशेष प्रसंग में जीव-स्त्री को पति-परमेश्वर के नाम के साथ जुड़ कर मानव-जीवन सफल करने के लिए मार्ग दर्शाते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि मार्गशीर्ष महीने की ठंडी-मीठी ऋतु में जो जीव-स्त्रियां प्रिय पति-परमेश्वर के संग बैठी होती हैं, जिनको मालिक ने अपने साथ मिला लिया होता है, उनकी प्रशंसा मैं क्या बयान करूं? अर्थात् उनकी प्रशंसा वर्णन से बाहर की बात है। उनका तन और मन अथवा उनका समूचा अस्तित्व ही परमात्मा व अच्छे सतसंगियों के संग से उल्लासमयी हो जाता है। जो अच्छे जनों की संगत से बाहर रहती हैं वे जीव-स्त्रियां अकेली पड़ जाती हैं अर्थात् मालिक के प्यार से वंचित रह जाती हैं। उनके सांसारिक दुख कभी निवृत्त नहीं होते, बल्कि वे यमों के वश पड़ जाती हैं।

गुरु जी पुनः नेक जीव-स्त्रियों का उल्लेख करते हुए फरमान करते हैं कि जिन जीव-स्त्रियों ने मार्गशीर्ष महीने की ठंडी-मीठी ऋतु में अपने पति-परमेश्वर को स्मरण किया वे सदैव सचेत होती हैं अर्थात् सांसारिक दुख मन पर भारी नहीं होने देती। उन्हीं जीव-स्त्रियों के गले में गुण रूपी रत्न, जवाहर, लाल शोभा दे रहे होते हैं।

सतिगुरु जी का कथन है कि हे नानक! मैं तो ऐसे नेक जनों की चरण-धूलि चाहता हूं जो प्रभु के द्वार पर, उसकी शरण में आ गए हैं। मार्गशीर्ष महीने में यदि प्रभु की सच्ची आराधना की हो तो जीव को बार-बार जन्म नहीं लेना पड़ता। उसका जन्म-मरण का दुख कट जाता है।

संपादकीय

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई . . .

सिक्ख धर्म की आधारशिला इसके सशक्त संकल्प एवं सिद्धांत हैं जो मानवतावादी कर्त्तव्यों पर आधारित सर्वसाझा भाईचारा सृजित करते हैं। इन सिद्धांतों को मानवता के लिए कल्याणकारी बनाने और सिक्ख पंथ की सदैव चढ़दी कला एवं आलौकिकता बरकरार रखने हेतु सैद्धांतिक संस्थाओं की सृजना हुई। इन संस्थाओं ने सिद्धांत के व्यवहारिक पक्ष को नियमबद्ध किया। मीरी-पीरी के सिद्धांत में से मीरी का व्यवहारिक रूप श्री अकाल तख़्त साहिब है, जो सिक्ख पंथ की प्रभुसत्ता-संपन्न बादशाहत का प्रतीक है।

श्री अकाल तख़्त साहिब ने हमेशा ही पंथ को एकता के सूत्र में पिरोए रखा है। इतिहास इस बात का गवाह है कि खालसा पंथ ने श्री अकाल तख़्त साहिब की अगुआई में बड़े-बड़े कौमी मसले ''होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई'' वाली आदर्श गुरमति युक्ति द्वारा हल किए हैं। श्री अकाल तख़्त साहिब की अगुआई में खालसा पंथ ने अपना राजनीतिक विकास किया है। श्री अकाल तख़्त साहिब की अगुआई में ही सिक्खों ने पंथक हितों की खातिर असंख्य कुर्बानियां दी हैं। श्री अकाल तख़्त साहिब के दिशा-निर्देश के तहत चलकर खालसा पंथ कौमी निशाने फतह करता रहा है।

अठारहवीं शती से लेकर बीसवीं शती तक के मुश्किल दौर में सिक्ख पंथ की गतीविधियों का केंद्र भी श्री अकाल तख़्त साहिब ही रहा है। सिंघों द्वारा पंथक मसलों के सम्बंध में श्री अकाल तख़्त साहिब पर एकत्र होकर पारित किए जाते गुरमतों के बारे में ऐतिहासिक ग्रंथों में हवाले मिलते हैं :

अकाल बुंगे चढ़ तखतै बहि हैं ।

लाइ दीवान गुरमते मतै हैं ।

खालसा पंथ का यह दृढ़ निश्चय है कि अगर कभी कौम पर कोई कठिन दौर आ जाए तो श्री अकाल तख़्त साहिब ने ही कौम की अगुआई करनी है। जब कभी भी सिक्ख पंथ पर कोई संकट आ जाता है तो देश-विदेश में बसते समूचे नानक नामलेवा सिक्खों का ध्यान श्री अकाल तख़्त साहिब की ओर केंद्रित रहता है।

सिक्ख पंथ एक गुलज़ार की भाँति है, जिसमें टकसालें, संत समाज, निहंग सिंघ जत्थेबंदियां, मिशनरी-प्रचारक, निरमले सिक्ख, सेवा-पंथी, उदासी आदि अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार नानक नाम की खुशबो बिखेर रहे हैं। जब कभी भी पंथक हितों के लिए साझे कौमी मध्यस्थ की ज़रूरत पड़े तो सर्वसाझा प्लेटफार्म केवल श्री अकाल तख़्त साहिब ने ही बनना है। पंथ को दरपेश चुनौतियों का सामना करने के लिए पंथक एकजुटता श्री अकाल तख़्त साहिब की अगुआई में ही साकार की जा

सकती है।

गत समय से भारत में बहुसंख्यकों द्वारा तरह-तरह के मंसूबे बनाकर अल्पसंख्यकों को अपने में समाने या समाप्त करने की प्रक्रिया चल रही है। इसी शृंखला में पंथ विरोधी ताकतों द्वारा सिक्खों को छोटे-छोटे मसलों में उलझाकर कौमी शक्ति को समाप्त करने की साजिश भी रची जा रही है, गुरमति सिद्धांतों और सिक्ख संस्थाओं का स्तर गिराने की कोशिश हो रही है, सिक्ख इतिहास के साथ छेड़छाड़ करने के प्रयत्न हो रहे हैं, शिक्षण संस्थाओं में बड़ी योजनाबद्ध ढंग के साथ घुसपैठ की जा रही है।

ऐसी दशा में प्रत्येक नानक नामलेवा को इन सभी सिक्ख विरोधी गतिविधियों से सुचेत होने की आवश्यकता है ताकि हम अपनी कौम, अपने साहित्य और अपनी कौमी विरासत को बचा सकें ।

आज समूची नानक नामलेवा संगत और संपूर्ण सिक्ख जत्थेबंदियों का सामूहिक नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि पंथ-विरोधी ताकतों के मंसूबों को नाकाम करने और गुरमति सिद्धांतों की पहरेदारी के लिए एकजुट होकर प्रयत्नशील हों! इस मंतव्य के लिए सिक्खों में गुरमति का प्रचार करने के लिए परंपरागत प्रचार-ढंग के साथ-साथ नई प्रचारक युक्ति अपनाने के ढंग भी तलाश करें! अपनी नौजवान पीढ़ी को गुरमति सिद्धांतों में सुदृढ़ करने और गुरमति विरासत के साथ जोड़ने का प्रयत्न करें, ताकि उनको कोई गुमराह न कर सके। सिक्खों में पैदा हो चुके पतितपन के रुझान को रोकने के लिए, इसके कारण तलाश कर इसके समाधान के लिए सार्थक हल ढूंढें! गुरु साहिबान और गुरसिक्खों द्वारा असंख्य शहादतों के साथ सृजित लासानी इतिहास से अपनी नई पीढ़ी को अवगत करवाने के प्रयत्न करें ताकि वह गलत इतिहासकारी का निर्णय स्वयं करने के योग्य बन सके। गुरसिक्ख नौजवानों को उचित अवसर प्रदान कर पूर्ण रूप से गुरमति के धारक व उच्च आचरण वाले, जज, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस, आई. पी.एस आदि बनाने के प्रयत्न करें, ताकि सिक्खी का सामाजिक तथा राजनीतिक आधार और मज़बूत बनाया जा सके ।

जिस घर की दीवारें ऊंची और मज़बूत होती वहां बाहरी घुसपैठ का कोई खतरा नहीं रहता। आज का समूचा सिक्ख पंथ मिलजुल कर अपने गुरमति सिद्धांतों की दीवारों को इतना मज़बूत कर ले कि विरोधी ताकतों के मंसूबे सफल न हो सकें । यह सब तभी संभव होगा जब हम अपने पुरखों के नक्शे-कदमों पर चल कर पूर्ण रूप से श्री गुरु ग्रंथ साहिब को समर्पित होकर *''होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ।। हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ।।''* की युक्ति के अनुसार जत्थेबंदक रूप से श्री अकाल तख़्त साहिब की सफा में शामिल होकर पंथक एकता-इत्तफाक के समर्थक बनेंगे।

उच्चतम मानव-मूल्यों के पोषक : श्री गुरु नानक देव जी

*-डॉ. मनजीत कौर**

सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी (१४६९ ई. से १५३९ ई.) के आविर्भावकालीन युग में मुस्लिम शासकों की हठधर्मिता, धर्मान्धता एवं स्वेच्छाचारिता के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में अशान्ति, अन्याय तथा अत्याचार व्यापक रूप से विद्यमान था। रूढ़िग्रस्त व दिग्भ्रमित समाज में व्यवस्था, आस्था एवं सामंजस्य स्थापित करने हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी अमृतमयी बाणी द्वारा समूची मानवता का मार्गदर्शन किया। उनकी दार्शनिक विचारधारा सामाजिकता से जुड़कर और भी पुष्ट हो गई। उन्होंने सामाजिक अन्याय को समाप्त कर आदर्श समाज की कल्पना को साकार करने हेतु सामाजिक वैषम्य, रूढ़ियों-आडम्बरों तथा समस्त कुरीतियों के विरुद्ध रणभेरी बजा दी। समूची मानवता के पथ-प्रदर्शन हेतु उन्होंने चार महान धर्म-प्रचार यात्राएं की, जिन्हें 'चार उदासियां' नाम से जाना जाता है।

मानव समाज के पछड़े वर्गों के प्रति गुरु जी की करुणा, अन्य धर्मों के प्रति सहनशीलता तथा न्यायपूर्ण समाज के लिए उनके भावनात्मक समर्थन से उनकी गहन अंतर्दृष्टि तथा आत्मज्ञान के दर्शन होते हैं। गुरु जी ने हमेशा नीच एवं अछूत समझे जाने वालों को अति प्रेम से गले से लगाया और स्पष्ट किया कि ईश्वर की रहमतें तो वहीं बरसती हैं जहाँ निम्न, असहाय एवं गरीबों की सार-सम्भाल होती है। इस संदर्भ में गुरु जी का पावन फरमान है :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु।।
नानकु तिन कै संगि साथि
वडिआ सिउ किआ रीस।।
जिथै नीच समालीअनि
तिथै नदरि तेरी बखसीस।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १५)

तभी तो सभी वर्गों एवं धर्मों के लोग श्री गुरु नानक देव जी को अपना 'गुरु' एवं 'पीर' मान कर सिजदा करते हैं। उनकी अद्वैत एवं समन्वय-भावना को नमन करते हुए एक शायर ने कितना सार्थक लिखा है :

बाबा नानक शाह फकीर!
हिंदू का गुरु, मुसलमान का पीर।

इस संदर्भ में भाई संतोख सिंघ लिखते हैं :

अनिक रहित परमातम जोइ।
नानक नाम कहावै सोइ।

डॉ. मुहम्मद इकबाल गुरु जी के प्रति अपनी श्रद्धा-भावना की सुंदर अभिव्यक्ति इस

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

प्रकार करते हैं :

फिर उठी आखिर सदा, तौहीद की पंजाब से।
हिंद को इक मर्दे-कामिल ने, जगाया ख्वाब से।

महान चिंतक भाई गुरदास जी गुरु जी के इस जगत में आने के परम उद्देश्य को बाखूबी बयान करते हैं :

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ
मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ
तारे छपि अंधेरु पलोआ। *(वार १:२७)*

अर्थात् श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से अज्ञानता का अंधकार मिट गया है और सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश हो गया है, जैसे सूर्योदय होने पर अंधेरा छट जाता है और सर्वत्र प्रकाश हो जाता है।

महमदी निजामी गुरु जी की महान शिक्षाओं से प्रभावित होकर पुकार उठता है :

आदमीअत जाग उठी, उसकी तालीमात से।
नूर की रौ फूट निकली, परदा-ए-जुलमात से।

डॉ. जयराम मिश्र के मतानुसार— ''श्री गुरु नानक देव जी सारे संसार के हितैषी एवं विश्वबंधु थे। उनकी यह प्रबल इच्छा थी कि सभी देशों के लोग समान रूप से सांसारिक अभ्युदय तथा परमार्थक उन्नति की प्राप्ति करे। सभी समान रूप से प्रेमपूर्वक रहें। सभी में पारस्परिक सौहार्द की भावना बढ़े।''

श्री गुरु नानक देव जी ने तीन सिद्धांत दिए, जिन्हें मनीषियों ने 'त्रिरत्न सिद्धांत' की संज्ञा से अभिहित किया है और स्पष्ट किया है कि इन सिद्धांतों पर अमल करने वाला दुनिया का कोई भी इंसान अपना लोक-परलोक सफल कर सकता है। ये सिद्धांत थे :—

१. किरत करो अर्थात् मेहनत की कमाई (श्रम) करो!

२. नाम जपो अर्थात् एक ईश्वर की आराधना करो!

३. वंड छको अर्थात् मिल-बांट कर खाओ!

सिक्ख पंथ के महान विद्वान कवि भाई साहिब भाई वीर सिंघ गुरु जी के त्रिरत्न सिद्धांत को मन-वचन कर्म से मानने का संदेश देते हुए गुरु-चरणों में नत्मस्तक होकर अपनी स्थिति को ब्यान करते हुए कथन करते हैं कि ''श्री गुरु नानक देव जी जगत में आये। हम लोग पशु के समान थे, हमें पशु से इंसान बनाया और फिर इंसान से देवता बना दिया। अब हमारा धर्म है कि हम धर्म की किरत करें, नाम जपें तथा मिल-बांट कर खाएं।

श्री गुरु नानक देव जी ने कलियुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हुए सहज एवं सरल ढंग से समझाया है कि यह संसार कर्म-भूमि है। यहां पर जैसे बीज बोएंगे, वैसी फसल तैयार होनी है। 'जपु जी साहिब' में बड़े सुंदर ढंग से समझाया गया है कि पुण्य-कर्म और पाप-कर्म कहने-मात्र के लिए नहीं बने अपितु मन-वचन-कर्म से मनुष्य जो कर्म करेगा, उन्हें संस्कार रूप में उकेर कर अपने साथ ले जाएगा और ईश्वर के अटल नियमानुसार स्वयं ही उनका फल भोगेगा। गुरबाणी-प्रमाण है :

पुंनी पापी आखणु नाहि।।

करि करि करणा लिखि लै जाहु।।
आपे बीजि आपे ही खाहु।।
नानक हुकमी आवहु जाहु।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४)

इसी संदर्भ में भाई गुरदास जी ने लिखा है कि जब श्री गुरु नानक देव जी से प्रश्न किया गया कि आपकी नज़र में हिंदू बड़ा है या मुसलमान, तो गुरु जी का सटीक जवाब था कि शुभ (नेक) कर्मों के बिना दोनों का ही जीवन व्यर्थ है :

पुछनि फोलि किताब नो
हिंदू वडा कि मुसलमानोई?
बाबा आखे हाजीआ
सुभि अमला बाझहु दोनो रोई। (वार १:३३)

श्री गुरु नानक देव जी के चिन्तनानुसार सत्य ऊँचा है और सत्य आचरण सर्वोपरि है :

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६२)

जिज्ञासु-मन का प्रश्न उठा कर श्री गुरु नानक देव जी उसका बड़ा प्यारा जवाब देते हुए फरमान करते हैं :

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १)

श्री गुरु नानक देव जी के चिन्तनानुसार झूठ एवं विकारों का पर्दा हट सके तथा हृदय-घर में सत्य-स्वरूप प्रभु का प्रकाश हो सके, इसके लिए एक ही मार्ग है— ईश्वर की रज़ा (हुक्म) में हर पल, हर हाल में खुश रहना चाहिए। ईश्वरीय आदेश को प्रसन्नतापूर्वक मानना ही उस मालिक की दरगाह में स्वीकार होने हेतु पहली शर्त है। फिर ईश्वर के हुक्म को जो गुरु-कृपा द्वारा समझ लेता है वह कदाचित अहंकार की बात नहीं करता :

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १)

श्री गुरु नानक देव जी ने जीवन के धरातल से मानव-शोषण का उन्मूलन कर दिग्भ्रमित मानवता को एकता, अखण्डता, भातृभावना एवं सर्वसाझी विचारधारा का पाठ दृढ़ करवाया। पहले-पहल संगत-पंगत की परम्परा चलाई, जिसमें अमीर-गरीब, छोटा-बड़ा, राजा रंक, स्त्री-पुरुष सभी एक साथ बैठ कर भोजन (लंगर) ग्रहण कर सकते थे। यह परंपरा वर्तमान समय में भी गतिशील है और रहती दुनिया तक ईश्वरीय अनुकम्पा से चलती रहेगी।

श्री गुरु नानक देव जी के समय में समाज में नारी को हेय दृष्टि से देखा जाता था। उसकी दशा अत्यंत दयनीय थी। गुरु पातशाह ने नारी को पुरुष के बराबर दर्जा दिया और हिदायत की कि जिस समाज में नारी को योग्य दर्जा नहीं मिलता वह समाज निरंतर अधोगति की ओर जाता है। गुरु जी ने नारी के हक में बुलंद नारा दिया :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७३)

अर्थात् पीरों-पैगंबरों, ऋषियों-मुनियों राजाओं-महाराजाओं की जननी का स्तर निम्न कैसे हो सकता है?

यही नहीं, गुरु जी के उपदेश समस्त धर्मों

हेतु समान थे, इसलिए उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों को समझाया कि पराया हक छीनना या खाना पाप है। हिंदू वर्ग हेतु पराया हक गाय का मांस खाने के समान है तथा मुसलमान वर्ग के लिए पराया हक सूअर का मांस खाने के समान है :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ।।
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४१)

राजनीतिक अन्याय देख कर श्री गुरु नानक देव जी का हृदय पसीज उठा। उन्होंने समकालीन शासकों की धर्मांधता एवं असहिष्णुता का वर्णन करते हुए अपनी शुद्ध देश-भक्ति का परिचय दिया :

राजे सीह मुकदम कुते।।...

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२८८)

अर्थात् बादशाह अत्याचारी है और उसके उत्तराधिकारी कुत्तों की तरह लोगों का खून चूस रहे हैं। वे हठात् (बलपूर्वक) जनता का सर्वस्व लूट रहे हैं।

बाबर को जाबिर कहा और उसके अत्याचारों से हुई भारत की दुर्दशा का चित्रण अपनी बाणी में करते हुए उसके द्वारा किए जा रहे जुल्म के खिलाफ आवाज बुलंद की और मानवता से अथाह प्रेम के कारण मानो गुरु जी ईश्वर को ही उपालम्भ दे रहे हों :

एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३६०)

श्री गुरु नानक देव जी ने राजतंत्र की अपेक्षा लोकतंत्र की प्रणाली को उपयोगी बताया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि राज-सिंहासन पर वही बैठे जो उस पर बैठने योग्य हो।

इसके अतिरिक्त श्री गुरु नानक देव जी ने श्रद्धाविहीन लोक-प्रदर्शन के लिए किए गए आडम्बरों एवं कर्मकांडों की तुलना बंजर भूमि के समान करते हुए कहा कि जैसे बंजर भूमि में बोए गए बीज और उन पर की गई मेहनत व्यर्थ चली जाती है, ठीक वैसे ही कर्मकांडों द्वारा मनुष्य का अमूल्य जीवन व्यर्थ चला जाता है। समाज को हर पक्ष से उन्नत देखने के अभिलाषी श्री गुरु नानक देव जी ने आर्थिक रूप से समानता हेतु करनी और कथनी की समानता पर बल देते हुए सदैव विनम्र बने रहने का पावन उपदेश दिया। मिष्टभाषी तथा विनम्र हृदय के धारक को समस्त गुणों का सार बताते हुए फरमान किया :

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७०)

श्री गुरु नानक देव जी ने संवाद (कथोपकथन) जारी रखने की हिदायत दी, क्योंकि आपसी संवाद सभी प्रकार की शंकाओं का निवारण करता है और समस्याओं से निजात दिलाता है तथा व्यर्थ के विवादों से भी बचाता है।

श्री गुरु नानक देव के जी निर्मल उपदेश एवं अमृत-तुल्य बाणी मानवतावादी दृष्टिकोण, भातृ-भावना, सर्वधर्म समन्वय एवं विश्वकुटुम्बकम भाव से ओत-प्रोत होने के कारण आज भी प्रासंगिक है।

बंदी छोड़ दिवस की ऐतिहासिकता एवं महानता

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

हम सभी सिक्खों का कर्त्तव्य है कि हम अपने को तथा अपने बच्चों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के फलसफे, गुरु साहिबान के जीवन-परिचय, सभी बाणीकारों के योगदान के संबंध में, सिक्खों के ऐतिहासिक व पवित्र स्थानों एवं पर्वों के विषय में अवगत करवाते रहें, ताकि हम सबकी सिक्ख धर्म में आस्था बनी रहें। हमें याद रखना चाहिए कि संसार के सभी सिक्ख प्रत्येक वर्ष दीपावली पर्व को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में श्रद्धापूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं, क्योंकि सन् १६१४ ई. में हमारे छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब मध्य प्रदेश के जिला ग्वालियर के किले की कैद में से अन्य बावन कैदी राजाओं को साथ लेकर रिहा हुए थे। फिर सिक्ख संगत के साथ दीपावली के दिन श्री हरिमंदर साहिब (श्री अमृतसर साहिब) पहुंचे थे। जहांगीर की कैद में से रिहा होने की खुशी में श्रद्धालु सिक्ख संगत ने श्री हरिमंदर साहिब सहित पूरे शहर में दीपमाला की और उत्सव मनाया। दीपावली की रात थी तथा गुरु जी स्वयं इस उत्सव में शामिल हुए थे। तब से आज तक सभी सिक्ख दीपावली पर्व को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाते आ रहे हैं।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को उस समय के मुगल शासक जहांगीर द्वारा बंदी क्यों बनाया गया, इसके पीछे एक पूरी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। हमें उस पृष्ठभूमि के बारे में जानना भी बहुत जरूरी है। यह तो हम जान ही चुके हैं कि उनकी रिहाई को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की बढ़ती हुई लोकप्रियता और महिमा तथा उनके द्वारा गठित की गई अपनी निजी सेना से जहांगीर बहुत चिढ़ने लगा था। वह गुरु जी को गिरफ्तार करने के लिए बहाने ढूंढने लगा था। 'महिमा प्रकाश' ग्रंथ गवाही देता है कि जहांगीर इस बात से भी काफी दुखी था कि दुनिया उनके दर्शन करने के लिए आती है और उन्हें 'सच्चा पातशाह' कहती है :

सभ संगत जिस दरशन को आवै।

बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०

कहि सच्चे पातशाह गुन गावै।
सुन जहांगीर मन महि रिसावै।
जतन करे कुझ हाथ नाह आवै।

गुरु जी ने पहले लोहगढ़ का किला बनाया। बाद में सन् १६०९ ई. में श्री हरिमंदर साहिब के सामने संप्रभुता-स्वायत्तता के प्रतीक १२ फीट ऊँचे श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना की, जबकि जहांगीर ने एलान किया हुआ था कि कोई भी व्यक्ति अपना निजी चबूतरा भी दो फीट से ऊँचा नहीं बना सकता। भिन्न-भिन्न संप्रदायों के लोग अपने-अपने क्षेत्र के धार्मिक वाद लेकर गुरु जी के पास श्री अकाल तख्त साहिब पर पेश होने लगे। गुरु जी सभी को न्याय देते थे। लोग अति प्रसन्न थे और गुरु जी को 'सच्चा पातशाह' कहने लगे थे। लोगों ने न्याय के लिए लाहौर व मुगल शासन की ओर ताकना बंद कर दिया था। श्री अकाल तख्त साहिब की महानता, मान्यता और लोकप्रियता बढ़ने लगी थी। दूसरी तरफ बादशाह जहांगीर गुरु जी को गिरफ्तार करने के मंसूबे बनाने लगा।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा लोहगढ़ का किला बनाना, श्री अकाल तख्त साहिब को स्थापित करना, विरोधी सेना में से नाम काटे गए सैनिकों को अपनी सेना में शामिल करना, लोगों के आपसी झगड़ों का निपटारा कर उनमें घनिष्ठता पैदा करना और इससे भी बढ़कर, लोगों को स्वतंत्रता, आत्मगौरव प्राप्त करने हेतु प्रेरित करना, ये सब समाज-कल्याण के कार्य जहांगीर द्वारा गुरु जी की गिरफ्तारी का आदेश देने के लिए पर्याप्त माने गए।

विद्वान सी. एच. पेन लिखता है— ''गुरु जी के शाही ठाठ (शान) एवं सेना ने जहांगीर को चिंतातुर किया और उसने आदेश दे दिया कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गिरफ्तार कर ग्वालियर के किले में भेज दिया जाए।''

इसी संबंध में इतिहासकार कनिंघम लिखता है— ''गुरु जी का अपना अलबेला स्वभाव और सेना का गठन उनकी गिरफ्तारी का कारण बना। गुरु जी कुश्ती लड़ते तथा खेल खेलते हुए आनंद लेते थे। इन्हीं लगाव व रुचियों ने गुरु जी को शिकार करने एवं फौजी सैनिक जीवन व्यतीत करने की ओर प्रेरित किया।''

प्रिंसिपल सतिबीर सिंघ के अनुसार सी. एच. पेन ने एक अन्य कारण भी बताया है। वो कहता है— ''श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ही एक ऐसे इन्सान थे, जो पिता श्री गुरु अरजन देव जी की शिक्षाओं पर चलने को समर्थ व योग्य थे। वे जाते समय कह गए थे कि सिक्ख धर्म सत्य, प्रेम, गौरव तथा आजादी का रक्षक

बनता आया है। तब तक जूझते-लड़ते रहना, जब तक जालिम खत्म न हो जाए या सुधर न जाए। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की भी यही इच्छा थी कि मजलूमों को जालिमों के हाथों से छुड़वाया जाए। ऐसे वीर योद्धा तैयार किए जाएं, जो प्रत्येक खतरे के आगे डटकर खड़े हो सकें और हरेक कुर्बानी के लिए तत्पर (तैयार) रहें। ऐसे आज़ादी वाले विचार सरकार सहन नहीं कर सकती थी। गुरु जी को गिरफ्तार करने के लिए उन्होंने उनमें दोष ढूंढने शुरू कर दिए।''

उपरोक्त विचारों के आलोक में कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में भी दुनिया की सरकारों ने लोगों की आज़ादी, सम्मान, गौरव के साथ जीने की इच्छा को दमनात्मक ढंग से कुचलने व दबाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में भी सच बोलने, सच लिखने वालों को दमनात्मक कार्रवाइयों द्वारा खामोश करने के मामले काफी बढ़ गए हैं। बहुसंख्यकों द्वारा अल्पसंख्यकों पर जब्रो-जुल्म करना विधि के विधान का अपमान है। इस पर देश की सरकार द्वारा चुप्पी साध लेना घोर निंदनीय है।

सन् १६१२ ई. में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें ग्वालियर के किले में भेज दिया गया। जिस कोठरी में उन्हें बंदी बनाकर रखा गया, वह सबसे ऊपर की मंज़िल (छत) पर स्थित थी। यह किला ग्वालियर शहर की पूरब दिशा में स्थित है तथा इसे शहर में किसी भी दिशा से देखा जा सकता है।

गुरु जी द्वारा किले में आने पर वहां पर पहले से कैद किए गए कैदियों में खुशी की लहर दौड़ गई। उन कैदियों में अधिकतर वे देसी राजा थे, जिन्हें मुगल सलतनत ने बगावत के दोष में असीमित समय के लिए बंदीगृह में डाला हुआ था। बंदी बनाए गए राजाओं की हालत अति दयनीय थी। वे जीवन से तंग आकर अपना आत्मसम्मान, आत्मविश्वास खो चुके थे। पहले ही दिन जब उन्होंने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को अपने बीच देखा, तो उनके मन में एक विश्वास पैदा हुआ। उन्हें अपनी रिहाई की आशा की किरण दिखाई देने लगी कि उन्हें बंदीगृह में से छुड़वाने वाला एक मसीहा, रहबर पहुंच चुका है। 'महिमा प्रकाश' के शब्दों में :

बड़े लोक बंद तह रहे। सतिगुर पास आन सभ बहे।

जब लग दरसन प्रभ का करें। चिंता सोक देखत पर हरें।

गुरु जी ने जेल के कर्मचारियों द्वारा दिया जाने वाला भोजन खाने से मना कर दिया।

मुहसिन फानी लिखता है कि आपको नमकीन खुराक तक खाने हेतु नहीं दी जाती थी। जेल के दारोगा हरिदास ने गुरु जी के लिए ग्वालियर शहर के एक मज़दूर, जो घसियारा था और हरी घास बेचा करता था, के घर का बना खाना लाने का प्रबंध कर दिया। गुरु जी को पता था कि जेल प्रशासन द्वारा दिए जाने वाले भोजन में कच्चा जहर मिलाकर दिया जाता हैं। वे हर पक्ष से सचेत थे। गुरु जी जब तक जेल में रहे, तब तक बाहर से ही खाना आता रहा। दारोगा हरिदास ने पहले से ही गुरु जी की शोभा सुन रखी थी। वह गुरु जी के चरणों से जुड़कर सिक्ख बन गया और उनकी सेवा में संलग्न रहा।

गुरु जी ग्वालियर में कैद थे, इस कारण सिक्खों में बेचैनी बढ़ने लगी। बाबा बुड्ढा जी तथा भाई गुरदास जी की आगवानी में सिक्खों ने रोष भरी बैठकें आयोजित करनी शुरू की। रात के समय मशालें जलाकर सिक्ख गुरु-शबद पढ़ते, जुलूस निकालते और रोष-प्रदर्शन करते। यह सब शांतिपूर्वक किया जा रहा था। कई जत्थे (दल) पंजाब से चलकर ग्वालियर पहुंचते। किले की दीवारों को चूम, परिक्रमा कर वे जत्थे के रूप में वापिस लौटते। भाई गुरदास जी ने लोगों की भावनाओं के अनुरूप वारों (वीर-रस काव्य) की रचना कर उनके मन को दृढ़ संकल्पित किया। पूरा पंजाब सचेत हो उठा। वज़ीर खान तथा साँई मियां मीर जी ने स्वयं आगरा में पहुंचकर जहांगीर को प्रेरित किया कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को बंदीगृह में से आज़ाद किया जाए। दूसरी ओर, कपटी दीवान चंदू अपने मंसूबों को पूरा करने की योजनाएं बनाने लगा। उसने पहले एक विषाक्त चोला भेजा। फिर दारोगा हरिदास को भी अपने साथ मिलाने की कोशिश की, किंतु उसने मना कर दिया और बात अपने इष्ट गुरु जी को बता दी कि कमीना चंदू कैसी-कैसी कमीनी हरकतें कर रहा है। उसने गुरु जी को भी सावधान रहने की प्रार्थना की।

आखिर वज़ीर खान तथा साँई मियां मीर जी ने अपने प्रयत्नों द्वारा गुरु जी की रिहाई का आदेश जहांगीर से प्राप्त कर लिया। जहांगीर भी समझ गया था कि ज्यादा देर तक यह विरोध की लहर रोकी नहीं जा सकती, अतः गुरु जी के साथ मेल-मिलाप रखना ही उचित रहेगा।

जब वज़ीर खान (हकीम अलीमुद्दीन अन्सारी, निवासी चिनुट) उनकी रिहाई का आदेश लेकर ग्वालियर पहुंचा, तो गुरु जी ने रिहा होने से स्पष्ट मना कर दिया। उन्होंने फरमान किया कि ''जब तक निर्दोष ५२

कैदी देसी राजाओं को भी रिहा नहीं किया जाता, तब तक मैं भी यहां से बाहर निकलने के लिए तैयार नहीं हूं।''

वज़ीर खान पुन: वापिस आगरा आया और जहांगीर को मनाने का प्रयास किया। पहले तो जहांगीर माना नहीं, लेकिन फिर उसे वज़ीर खान की तर्कपूर्ण बातें माननी ही पड़ी। जहांगीर के हठ को देखते हुए दारोगा हरिदास ने एक योजना बनाई जोकि जहांगीर को पसंद आ गई कि जो कोई भी गुरु जी के चोले को पकड़ कर बाहर आएगा, उसे ही रिहा किया जाएगा। 'महिमा प्रकाश' ग्रंथ वर्णन करता है :

जो दामन पकड़ गुर बाहर आवै।
सो भए खलास अपने घर जावै।

गुरु जी के लिए ५२ कलियों (लड़ियों) वाला एक विशेष चोला सिलवाया गया। प्रत्येक कली की डोरी को एक-एक राजा ने पकड़ लिया तथा वे भी रिहा हो गए। इस घटना के विषय में सुनकर सिक्ख संगत एवं अन्य लोगों ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को 'बंदी छोड़ दाता' कहना शुरू कर दिया।

गुरु जी रिहा हुए और सिक्खों के तप्त हृदय को शांत करते हुए, सिक्ख धर्म का प्रचार करते हुए श्री अमृतसर साहिब पहुंचे और यहां श्री हरिमंदर साहिब में दीपावली का त्योहार मनाया गया। तभी से रिवायत के अनुसार प्रत्येक वर्ष दीवाली पर्व सिक्खों द्वारा पूरे उत्साह, उल्लास, श्रद्धा व हर्ष के साथ मनाया जाता है। जहाँगीर द्वारा गुरु जी के कारावास की अवधि १२ वर्ष निर्धारित की गई थी, मगर सिक्खों में बढ़ रहे आक्रोश को देखते हुए तथा निष्पक्ष व न्यायप्रिय हस्तियों द्वारा हस्तक्षेप करने पर गुरु जी को दो वर्ष की अवधि के बाद ही रिहा कर दिया गया था।

अब हम सभी को छठे पातशाह 'बंदी छोड़ दाता' द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर अहं, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, झूठ, फरेब, घमंड, बेईमानी जैसे अवगुणों की कैद में से स्वयं को मुक्त करना है! धर्म, परोपकार, प्रेम, सद्भावना, ईमानदारी, सच्चाई जैसे सद्गुणों को आत्मसात किए रखना है!!

बंदी छोड़ दिवस की महानता को सही अर्थों में समझने की आवश्यकता है!

नामे हरि का दरसनु भइआ।।

*-डॉ. सत्येन्द्रपाल सिंघ**

भारतवर्ष के भक्तों, संतों में भक्त नामदेव जी का नाम अग्रिम पंक्ति में आता है। आपका जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले के नरसी बामनी नामक गांव में हुआ था। भक्त नामदेव जी का यश पूरे भारत में फैला। पूरा मानव समाज परमात्मा के प्रति उनके समर्पण, प्रेम व आस्था से प्रेरित हुआ। समर्पण और प्रेम श्री गुरु नानक साहिब के पंथ के भी आधार-स्तम्भ थे। संभवत: यही मुख्य कारण था कि भक्त नामदेव जी की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित की गई। भक्त नामदेव जी ने परमात्मा से अपनी प्रीति का स्वयं श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ११६४ पर अंकित अपनी बाणी में उल्लेख किया है। आपने कहा है कि जैसी प्रीति एक भूखे की अन्न-भोजन के साथ होती है, एक प्यासे की जल के साथ होती है, एक अज्ञानी की अपने परिवार, कुल के साथ होती है, वैसी ही मेरी प्रीति परमात्मा के साथ है। परमात्मा को भक्त जी ने तन-मन की भटकन दूर करने वाले अन्न के रूप में, आत्मिक संतृप्ति प्रदान करने वाले जल के रूप में और सदैव सहायक कुल के रूप में देखा। भक्त नामदेव जी ने परमात्मा-प्रेम की गहराई समझाने के लिये साधारण जन जीवन के उदाहरण दिये। सघन प्रीति भक्त नामदेव जी के मन में परमात्मा के प्रति थी। उन्होंने कहा कि परमात्मा उनके मन, उनके विचारों में बस गया है।

परमात्मा मन में, विचारों में बस जाये तो जीवन का ढंग ही बदल जाता है। भक्त नामदेव जी के साथ भी ऐसा ही हुआ। उनके नाना भक्ति-भाव वाले पुरुष थे और नित्य ठाकुर की मूर्ति की पूजा किया करते थे। एक बार वे बाहर गये तो बालक नामदेव जी को ठाकुर को दूध का भोग लगा कर भोजन करने का कह गये। भक्त नामदेव जी दूध भरा कटोरा ठाकुर की मूर्ति के आगे रख कर बैठ गये। वे बाल सुलभ उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे कि कब ठाकुर दूध का भोग लगायें और वे भोजन करें। समय व्यतीत होता गया किन्तु दूध से भरा कटोरा वैसा का

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

वैसा ही रखा रहा। भूखे-प्यासे भक्त नामदेव जी हठ कर बैठे रहे। अंतत परमात्मा ने उनके प्रेम व समर्पण को स्वीकार किया था :

एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ।।
नामे देखि नाराइनु हसै ।।३ ।।
दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ।।
नामे हरि का दरसनु भइआ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६३)

भक्त नामदेव जी ने विस्मयजनक बात कही। उन्होंने कहा कि परमात्मा ऐसा प्रेम-परायण है कि उसका प्रिय भक्त उसके हृदय में बसता है अर्थात् परमात्मा अपने भक्त की लाज रखने के लिये कुछ भी कर सकता है। भक्त नामदेव जी की लाज रखने के लिये परमात्मा स्वयं उनके मन में प्रकट हुए। इस घटना ने भक्त नामदेव जी की प्रतिष्ठा स्थापित कर दी। भक्त नामदेव जी को कालांतर में प्रसिद्ध धर्म पुरुष विशोबा खेचर जी का संग मिला, जिसने उनकी भक्ति की धारा को नई दिशा दी। अब वे निराकार परमात्मा की भक्ति की ओर उन्मुख हो गये :

ऐसो राम राइ अंतरजामी ।।
जैसे दरपन माहि बदन परवानी ।।१ ।।रहाउ ।।
बसै घटा घट लीप न छीपै ।।
बंधन मुकता जातु न दीसै ।।१ ।।
पानी माहि देखु मुखु जैसा ।।
नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ।।२ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३१८)

जीवन के आरंभिक चरण में परमात्मा का निवास मूर्ति में देखने वाले भक्त नामदेव जी को बोध हो गया था कि परमात्मा घट-घट में रमा हुआ है। वह सर्वव्यापी अंतर्यामी शक्ति है, जिसे हर जीव के मन का पूरा हाल ज्ञात है। उसे सम्पूर्ण सृष्टि का हाल ऐसे स्पष्ट ज्ञात है जैसे दर्पण में अपना मुख स्पष्ट, बिना किसी व्यतिक्रम के दिखाई देता है। भक्त नामदेव जी ने परमात्मा को एक निर्लिप्त सत्ता बताया जो सर्वग्राही है। परमात्मा के ऐसे ही स्वरूप के दर्शन गुरु साहिबान ने भी कराये थे। भक्त नामदेव जी ने कहा कि निराकार परमात्मा की कृपा कर्मकांड से नहीं, नाम जप कर ही प्राप्त होती है।

देवा पाहन तारीअले ।।
राम कहत जन कस न तरे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३४५)

पत्थर पानी में डूब जाता है। वृत्तांत है कि जब पत्थरों पर परमात्मा का नाम, राम-नाम लिख दिया गया तो वे तैरने लगे, डूबे नहीं। भक्त जी ने तर्क दिया कि जब परमात्मा का लिखा नाम पत्थरों को डूबने से बचा लेता है तो यह कैसे हो सकता है कि जो परमात्मा का नाम जपे, उसका उद्धार न हो जाये। नाम

जपने से मनुष्य जीवन-उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है। नाम जपना मन की भक्ति है, जो परिवार, समाज में रह कर की जा सकती है। भक्त नामदेव जी ने तत्कालीन त्याग व हठ की कल्पित धारणाओं का निर्भीकता से खंडन करते हुए गृहस्थ जीवन अपनाया। ग्यारह वर्ष की आयु में ही आपका विवाह हो गया था। आपके चार पुत्र और एक पुत्री थी। भक्त नामदेव जी ने पैतृक कार्य— कपड़ों की रंगाई और छपाई का अपनाया, किन्तु अधिकांश समय परमात्मा की भक्ति में व्यतीत होता था। आप नाम जपते, भजन गायन करते। आप महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत नानेश्वर के शिष्य बन गये। आप जब संत ज्ञानदेव के संपर्क में आये तो भ्रमण करते हुए पंजाब तक गये थे।

आपके जीवन में घटित हुई कतिपय घटनायें आपके आध्यात्मिक सामर्थ्य को उजागर करती हैं। आपकी बाणी में भी कुछ उल्लेख मिलते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित आपकी बाणी आपको अध्यात्म के शिखर संत के रूप में स्थापित करती है। भक्त नामदेव जी की मूल मान्यता एक परमात्मा की सर्वव्यापकता की थी। आपने कहा कि परमात्मा एक है, जो सर्वत्र प्रकट हो रहा है। परमात्मा की लीला विचित्र और मंत्र-मुग्ध कर देने वाली है। उसकी लीला को समझने वाला कोई अपवाद-स्वरूप ही है। भक्त जी ने कहा कि उन्हें कहीं भी परमात्मा के अतिरिक्त कोई दिखाई ही नहीं देता है :

सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है
गोबिंद बिनु नही कोई ।।
सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे
ओति पोति प्रभु सोई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८५)

सृष्टि में सर्वत्र, हर घट में, कण-कण में परमात्मा का वास है, परमात्मा का ही रूप है। परमात्मा के अतिरिक्त कोई अन्य ऐसी सर्वव्यापक सत्ता नहीं है। परमात्मा की सर्वव्यापकता को समझाने के लिये भक्त नामदेव जी ने माला का उदाहरण दिया कि जैसे सैकड़ों, हजारों मोती एक सूत में ही पिरोए होते हैं। सूत ही माला को आकार देता है। अनगिनत मोतियों का आधार एक सूत बनता है। वैसे ही परमात्मा समस्त जीवों, सृष्टि की प्रत्येक रचना का आधार है। ऐसे परमात्मा की भक्ति के लिये भी विशेष यत्न करना होता है। परमात्मा के आगे फूल चढ़ाना, दूध अर्पित करना आदि आपको परमात्मा की महानता के अनुरूप नहीं लगा। उस समय एक वर्ग विशेष की पूजा को

अधिकृत माना जाता था। नाम जपना ही भक्त नामदेव जी को एक उत्तम मार्ग लगा।

कहा करउ जाती कह करउ पाती।।
राम को नामु जपउ दिन राती।।१।।रहाउ।।
रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ।।
राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८५)

परमात्मा का नाम जपने के लिये किसी को माध्यम बनाने की आवश्यकता नहीं होती। यह किसी का विशेषाधिकार नहीं है। मन में समर्पण और प्रेम हो तो दिन-रात मन परमात्मा का नाम जपता है। नाम जपने के लिये मन परमात्मा-प्रेम के रंग में रंग जाये और परमात्मा के साथ स्वामी-सेवक का अटूट संबंध स्थापित कर ले। इसे भक्त नामदेव जी ने अपने पैतृक व्यवसाय की शब्दावली में रंगना और सिलना कहा। उन्होंने कहा कि इसके बिना तो एक घड़ी भी जीवन जीना व्यर्थ है। मन रंगा और जुड़ा हुआ हो तो घड़ी भर भी परमात्मा से दूर नहीं रह सकता। उपरोक्त वचन में आगे परमात्मा में रमे हुए मन की अवस्था समझाते हुए भक्त जी ने कहा कि नाम जपना परमात्मा के साथ जुड़ने के लिये ऐसा बेशकीमती है जैसे सोने की सुई में चांदी का धागा पिरो कर पक्की सिलाई की गई हो।

मन में परमात्मा की सच्ची प्रीति हो और पूर्ण समर्पण हो तो सुख-दुख, मान-अपमान, हर्ष-विषाद का विचार ही आलोप हो जाता है। परमात्मा-प्रेम का रंग जीवन को और जीने की दृष्टि को ही परिवर्तित कर देता है। परमात्मा का नाम जपने से अधिक सुखद कुछ प्रतीत ही नहीं होता है। मनुष्य के लिये यह बड़े भाग्य की बात होती है कि उसे परमात्मा की भक्ति का अवसर और प्रेरणा मिल रही है। भक्त नामदेव जी ने इस भावना को अपनी बाणी में बड़े सुंदर ढंग से व्यक्त किया है :

जौ राजु देहि त कवन बडाई ।।
जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई।।१ ।।
तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ।।
बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५२५)

परमात्मा की लीला अपरंपार है। वह किसी को भी राज-सिंहासन पर बिठा सकता है या उससे भीख मंगवा सकता है। भक्त नामदेव जी ने कहा कि यदि किसी को राजपाट प्राप्त हो गया है तो इसमें उसकी कोई योग्यता अथवा सामर्थ्य नहीं होता है, इसका कारण पूर्णरूपेण परमात्मा की कृपा और महानता है। राज-पाट प्राप्त कर भी उसे परमात्मा का विनम्र सेवक बने रहना

चाहिये। यदि उसे भिक्षुक बना दिया है तब भी उसे समान भाव से परमात्मा की प्रेम-भक्ति करनी चाहिये। जीवन का उद्देश्य संसार के सुख भोगना नहीं, चौरासी लाख योनियों के आवागमन से मुक्त होना है। भक्त नामदेव जी का पूरा जीवन परमात्मा के प्रति दृढ़ आस्था का प्रतीक था।

एक बार बिदर के एक श्रद्धालु ने भक्त नामदेव जी को अपने घर भजन-बंदगी के लिये आमंत्रित किया। भक्त जी अपने अनुयाइयों के साथ वहां पहुंचे तो दिल्ली के बादशाह मुहम्मद बिन तुगलक ने उन्हें गिरफ्तार करवा लिया। जब उसे पता चला कि ये प्रतिष्ठित संत हैं तो परीक्षा के लिये मरी हुई गाय को जिंदा करने के लिये कहा। भक्त नामदेव जी ने इनकार कर दिया कि यह परमात्मा के विधान में हस्तक्षेप होगा। नाराज बादशाह ने उन पर मस्त हाथी छोड़ दिया। हाथी जब निकट आया तो शांत हो भक्त जी को सूंड़ झुका कर प्रणाम किया। सभी हैरान रह गये। परमात्मा ने भक्त नामदेव जी का मान रखा :

नामे की कीरति रही संसारि ।।
भगत जनां ले उधरिआ पारि ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६६)

भक्त नामदेव जी की संसार में प्रतिष्ठा का कारण परमात्मा के प्रति उनका गहरा प्रेम था। परमात्मा अपने भक्त के प्रेम को ही देखता है, प्रेम-भावना का ही सम्मान करता है :

बेढी प्रीति मजूरी मांगै
जउ कोऊ छानि छवावै हो ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५७)

ऐतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार भक्त नामदेव जी ने अपने जीवन के लगभग बीस वर्ष पंजाब में व्यतीत किये। समाज के साथ निकट संबंध व गुरु साहिबान की विचारधारा के साथ उनकी अनुकूलता के कारण ही भक्त नामदेव जी की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हुई और सिक्ख जगत में उनका सम्मान स्थापित हुआ। भक्त जी के निवास-स्थान पंढेरपुर, महाराष्ट्र में उनकी स्मृति में भव्य मंदिर का निर्माण सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने कराया था। भक्त, संत किसी देश, समाज, क्षेत्र के नहीं, समस्त मानव समाज का गौरव होते हैं, क्योंकि उनका चिंतन सर्वकल्याण हेतु होता है। भक्त नामदेव जी सभी के पूज्य हैं।

बाबा दीप सिंघ जी शहीद
तलवंडी साबो से श्री अमृतसर साहिब तक

*– स. सिमरजीत सिंघ**

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी चमकौर की जंग के बाद पड़ाव-दर-पड़ाव श्री अमृतसर साहिब (खिदराणे की ढाब) पहुंचे और श्री मुकतसर साहिब की जंग के बाद तलवंडी साबो पहुँचे। यहां से सिक्खों को हुकमनामे जारी किये। इस स्थान का नाम 'श्री दमदमा साहिब' पड़ गया। तलवंडी साबो में आज जहाँ तख़्त श्री दमदमा साहिब की इमारत बनी हुई है, इस जगह पर गुरु जी दरबार सजाया करते थे। इसी स्थान पर माता जी ने साहिबजादों की शहीदी का हाल जाना था। तलवंडी साबो में गुरु साहिब के लम्बा समय निवास करने के कारण यहाँ के कई स्थान गुरु साहिब की यादों के साथ जुड़े हुए हैं और सिक्ख संगत यहाँ पर दर्शनार्थ आती है। उच्च कोटि के विद्वान, नाम-अभ्यासी, कुर्बानी के पुंज, धार्मिक शूरवीर, सिक्ख पंथ के स्वाभिमानी जत्थेदार बाबा दीप सिंघ जी भी इस स्थान पुर गुरु जी के संग रहा करते थे। यहाँ पर बाबा दीप सिंघ जी द्वारा खुदवाया गया एक कुआँ है, जो तख़्त साहिब की परिक्रमा में स्थित है। इसे 'शहीदों वाला कुआँ' भी कहा जाता है। बाबा दीप सिंघ जी ने यहाँ पर निवास-काल के दौरान श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रतिलिपियां तैयार कीं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इसी स्थान से दक्षिण भारत की तरफ गए तो इस जगह की सेवा-संभाल का जिम्मा बाबा दीप सिंघ जी को सौंप गए। इसी स्थान से बाबा दीप सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर का साथ देकर बहुत-से जंग जीते। आपना स्थायी निवास तलवंडी साबो ही रखा। आपको गुरबाणी लिखने-पढ़ने की बहुत लगन थी।

अदीना बेग के मरने के बाद जलंधर जब सिक्खों के अधिकार में आ गया तो उस समय बाबा दीप सिंघ जी ने सियालकोट का इलाका मुहम्मद अमीन से फतह कर अपने साथी भाई दयाल सिंघ और भाई नत्था सिंघ शहीद को दिया, जो शहीद भाई करम सिंघ के समय तक मिसल शहीदां को सालाना कुछ न कुछ पहुँचाते रहे, किंतु गुलाब सिंघ का अड़ियल रवैया देख कर वह जागीर दरबार बाबा नानक साहिब के नाम लगा दी।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद सिंघों पर जब्र-जुल्म का दौर शुरू हो गया। सिंघ जंगलों-पहाड़ों में चले गए। इन्हीं दिनों

*पूर्व अपर सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब– १४३००१, फोन : ९८१४८-९८२२३

अहमद शाह अब्दाली के हुक्मानुसार शहर श्री अमृतसर साहिब को लूटा गया। श्री दरबार साहिब की इमारत को तोपों द्वारा गिराया गया और सरोवर को मिट्टी से पाट दिया गया। जब बाबा दीप सिंघ जी के पास श्री दरबार साहिब की बेअदबी की ख़बर श्री दमदमा साहिब पहुँची तो उनसे सुन कर रहा नहीं गया। उन्होंने उसी समय श्री अमृतसर साहिब पहुँच कर बदला लेने का फ़ैसला कर लिया। झटपट अपनी जगह भाई नत्था सिंघ को छोड़ कर श्री अमृतसर साहिब की ओर कूच कर दिया। उस समय आप जी के साथ मात्र ५०० सिंघों का जत्था था। रास्ते में निकटवर्ती गाँवों— जोगा, दोराज, भुच्चो, गोबिंदपुरा, लक्खी जंगल, बहिमान, माहनवाल, कोट, पंजो के, गुरू चौतरां, फूल, महिराज, दराज़ से सिंघ जत्थे में शामिल होते गए। इस प्रकार तरनतारन पहुँचने तक उनके साथ लगभग पाँच हज़ार वीर सिंघों का जत्था बन गया था।

उधर लाहौर के सूबे को भी ख़बर लग गई कि सिक्ख दीपावली के अवसर पर श्री अमृतसर साहिब में इकठ्ठा हो रहे हैं। हाजी अतायी खान गश्ती फ़ौज लेकर सिक्खों का खुराखोज मिटाने के लिए चक्कर लगा रहा था। श्री अमृतसर साहिब पहुँच कर सिक्खों को कुचलने का हुक्म हुआ। उधर से सूबे ने ढिंढोरा पिटवा कर लाहौर में जेहाद का एलान करवा दिया और सभी मोमिनों को मैदान में आने के लिए ललकारा। लाहौर का फ़ौजदार जहान खान दो हज़ार सवार लेकर श्री अमृतसर साहिब की तरफ चल पड़ा। दोनों दलों का गाँव गोहलवड़ के निकट मुकाबला हो गया। सिंघों ने ऐसी शूरवीरता दिखाई कि शाही फ़ौज में भगदड़ मच गई। इतनी देर में हाजी अतायी खान भी फ़ौज व तोपें लेकर पहुँच गया। बड़ी घमासान लड़ाई हुई। सिंघों ने श्री अमृतसर साहिब पहुँचने की कोशिश में ऐसी तेग़ चलाई और बहादुरी दिखाई कि छः कोस में लाशों के ढेर लग गए। सारी धरती ख़ून से लथपथ हो गई। श्री दरबार साहिब से कुछ दूरी पर हो रही आमने-सामने की लड़ाई में बाबा दीप सिंघ जी की गर्दन पर दुश्मन की तलवार का गहरा वार लगा। उनका शीश धड़ से अलग हो गया। बाबा जी को इस हाल में देखकर एक सिंघ ने उत्साहपूर्वक कहा, ''बाबा जी! आपने तो अरदास की थी कि अगर शहीद भी होना पड़ा तब भी श्री दरबार साहिब तक अवश्य पहुंचा जाएगा।'' यह सुन कर बाबा जी ने शीश को बायें हाथ से संभाला और दायें हाथ से ८ सेर वजन (कच्चा) का खंडा चलाते हुए और शत्रु-दल को मार भगाते हुए श्री दरबार साहिब की परिक्रमा में पहुँच कर अपना प्रण निभा कर दिखा दिया। इस प्रकार बाबा दीप सिंघ सन् १७५७ ई. में शीश हथेली पर रख कर लड़ते हुए श्री दरबार साहिब के मान-सम्मान की

रक्षार्थ शहादत प्राप्त कर गए। इसी प्रकार जत्थेदार राम सिंघ बहुत-से मुगलों को मार कर शहीद हो गया, जिनका 'शहीदगंज' रामगढ़िया कटड़ा में है। बाबा सज्जण सिंघ, बाबा बहादर सिंघ तथा कई अन्य सिंघ गुरु का बाग़ में लड़ते हुए शहीद हो गए। उनका स्थान बाग़ में सुस्थित है। बाग़ की जगह पर आजकल गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हॉल शोभित है। इन शहीदों की याद में गुरुद्वारा मंजी साहिब के निकट निशान साहिब झूल रहा है, जिसके चबूतरे पर निम्नलिखित सिंघों के नाम लिखे हुए हैं :—

१. बाबा दीप सिंघ जी शहीद प्रमुख जत्थेदार

२. बाबा बलवंत सिंघ जी शहीद जत्थेदार

३. बाबा हीरा सिंघ जी शहीद जत्थेदार

४. बाबा गंडा सिंघ जी शहीद जत्थेदार

५. बाबा लहिणा सिंघ जी शहीद जत्थेदार

६. बाबा रण सिंघ जी शहीद जत्थेदार

७. बाबा गुपाल सिंघ जी शहीद जत्थेदार

८. बाबा भाग सिंघ जी शहीद जत्थेदार

९. बाबा सज्जण सिंघ जी शहीद जत्थेदार

१०. बाबा बहादर सिंघ जी शहीद जत्थेदार

जब इस लड़ाई का हाल बाबा गुरबखश सिंघ और भाई दरगाह सिंघ ने सुना तो वे उसी समय श्री अनंदपुर साहिब से दो हज़ार सवार लेकर चढ़ाई करते हुए आ गए और शत्रु-दल के साथ लड़ते हुए श्री अमृतसर साहिब पहुँच गए। सिंघों को पवित्र गुरु-स्थान श्री हरिमंदर साहिब की अपमानित व ध्वस्त इमारत को देख कर बहुत दुख हुआ। उन्होंने रात को छापे मार कर शत्रु के थाने-तहसीलें सब जला दीं। सिंघों के मुकाबले के लिए और मुग़ल फौज बुला ली गई तथा सिंघों का खुराखोज मिटाने का हुक्म दे दिया गया। शाह नाजमदीन, सर बुलंद खान, जाबिर खान, ज़ालिम खान आदि फ़ौजदार २० हज़ार लड़ाकू पठान लेकर मैदान में आ गए। उधर १९ मार्गशीर्ष, १८१८ को जत्थेदार बाबा गुरबखश सिंघ आदि ने दुश्मन की चढ़ाई सुन कर धर्म-युद्ध के लिए अरदास कर मुकाबला करने की ठान ली। सूर्योदय तक पठानों की बड़ी फ़ौज श्री अमृतसर साहिब पहुँच गई। अमृतसर सरोवर के पीछे की तरफ़ बड़ी घमासान लड़ाई हुई, जिसमें बाबा गुरबखश सिंघ, बाबा निहाल सिंघ, बाबा बसंत सिंघ आदि बड़े जत्थेदार शहीद हो गए।

श्री अकाल तख़्त साहिब के निकट बाबा गुरबखश सिंघ की याद में गुरुद्वारा सुस्थित है। बाबा निहाल सिंघ चुरसती अटारी के निकट शहीद हुए थे। उस स्थान पर उनकी यादगार निर्मित है।

नवंबर १९८४ के सिक्ख कत्ल-ए-आम का दर्दनाक वृत्तांत

*-डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ**

सिक्ख धर्म, दस गुरु साहिबान के आध्यात्मिक अनुभव द्वारा स्थापित हुआ धर्म है। अकाल पुरख वाहिगुरु की गुरु-स्वरूप ज्योति ही मूर्तिमान होकर 'नानक' नाम धारण कर मातलोक में प्रकट हुई। श्री गुरु नानक देव जी का उद्देश्य मूलत: 'जगत-उद्धारण' था। गुरु साहिबान ने जो भी कार्य किये, लोक-कल्याणार्थ किये। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने सर्वप्रथम हिंदू धर्म में प्रचलित जातीय विचारधारा को मूलत: रद्द किया, जिस कारण सिक्ख धर्म पर आक्रमणों का दौर श्री गुरु नानक देव जी के काल से ही आरंभ हो गया था।

श्री गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारियों ने भी उक्त सिद्धांत पर पहरा देते हुए अपने-अपने समय में कारगर यत्न किये। फलस्वरूप सिक्ख धर्म अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु निरंतर आगे बढ़ता गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शख्सी गुरु-परंपरा ख़त्म करते हुए खालसा पंथ को अपना नेतृत्व खुद करने के योग्य बनाया। खालसा पंथ की सृजना से कुछ समय पश्चात् ही सिक्ख धर्म को मुग़ल हुकूमत के ज़ुल्म का शिकार होना पड़ा। ध्यानपूर्वक विचार करें तो सिक्ख धर्म के आरंभ से ही विरोधी शक्तियां इसे हज़म न करते हुए लगातार हमलावर रुख अपनाती आई हैं। १७वीं सदी में मुगलों ने धार्मिक और राजनैतिक कारणों से सिक्ख धर्म के प्रति हमलावर रुख इख्तियार कर लिया था। मुगलों ने १८वीं सदी तक सिक्खों का खुराखोज मिटाने का हर संभव प्रयास करते हुए वहशीयाना जब्र का नमूना पेश किया। अबद-दल-समद खान (१७१३ - २६ ई.) से लेकर मीर मन्नू (१७४८ - ५३ ई.) तक प्रत्येक सूबेदार ने सिक्खों पर घोर अत्याचार किये। यहाँ तक कि सिक्खों के बंद-बंद काटे गए, उन्हें आरे से चीरा गया, उनके सिर की खोपड़ी उतार दी गई, सिर के दाम निर्धारित किए गए। असंख्य सिंघों, सिघनियों और भुझंगियों को शहीद किया गया। यहाँ तक कि दो घल्लूघारे भी किये गए, जिनमें बड़ी संख्या में सिक्खों की शहादत हुई।

इस दौरान एक समय ऐसा भी आया जब ख़ालसा ने अपनी सत्ता स्थापित की। बेशक

*सहायक प्रोफेसर, धर्म अध्ययन विभाग, यूनिवर्सिटी कॉलेज, मीरांपुर, पटियाला— १४७१११, फोन : ९९८८०-०४७३३

ऐतिहासिक दृष्टि से यह समय बहुत कम था, फिर भी खालसा राज ने इतिहास के पन्नों पर अमिट छाप छोड़ी। १८४९ ई. की जंग के बाद सिक्ख राज का ख़ातिमा हो गया और अंग्रेज़ हुकूमत ने पंजाब की धरती पर अपने पैर पसारे। यहाँ यह लिखना सार्थक होगा कि १८वीं सदी के दौरान खालसा पंथ के अंदर पातशाही जज़्बा इतना प्रबल था कि वे सतिगुरु के अलावा किसी अन्य दुनियावी ताकत की अधीनता स्वीकार नहीं करते थे। ख़ालसा के इस विश्वास को भाई रतन सिंघ (भंगू) ने इस प्रकार अंकित किया है :

खालसो होवै ख़ुद खुदा
जिम ख़ूबी खूब खुदाइ।
आन न मानै आन की
इक सचै बिन पतिशाह।।

१९वीं सदी के अंत तक भारत के राजनैतिक महौल में बहुत बदलाव आया। समय के बदलने के साथ भारत में देश-भक्ति (राष्ट्रवाद) के जज़्बे ने तेज़ रफ़्तार पकड़ी। हिंदू वर्ग में देश-भक्ति की भावना जैसे-जैसे प्रफुल्लित होती गई, वैसे-वैसे सिक्खों की मुसीबतों में विस्तार होता गया। हिंदू कूटनीति के कारण सिक्खों को हिंदुओं का अंग बताया जाने लगा, ताकि सिक्खों की लड़ने-मरने वाली प्रवृत्ति के अधीन मुसलमानों के साथ टक्कर ली जा सके। इसी कारण हिंदू राष्ट्रवादियों द्वारा सिक्ख जुझारू (कौशल) परंपरा को हथियाने की साजिशें आरंभ हुईं। निष्कर्ष के तौर पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को 'हिंदू कौम के नायक' के रूप में उभारना शुरू किया गया।

२०वीं सदी के शुरूआती दौर में गांधी ने 'सभ्याचार' (संस्कृति) को महत्व दिया। उसके अनुसार हिंदू राष्ट्रवाद बनाने के लिए अल्पसंख्यकों को 'सभ्याचार' के बैनर तले हिंदू मुख्य धारा में शामिल किया जा सकता था, क्योंकि धार्मिक भिन्नतायों के बावजूद सभी धर्मों का 'सभ्याचार' साझा था। गांधी की धारणा थी कि भारत के सभी धर्मों के लोग पहले-पहल हिंदू ही थे, बाद में यदि किसी ने अपना धर्म परिवर्तित कर भी लिया तो उसका मूल 'सभ्याचार' परिवर्तित नहीं हुआ।

वास्तव में गांधी के 'सभ्याचार' वाले पैंतरे के पीछे उसकी कूटनीति और सिक्खों के प्रति उसकी नफ़रत काम कर रही थी। सिक्खों को वह हिंदू धर्म का ही एक अंग समझता था। उसका कहना था कि "सिक्ख गुरु साहिबान के बारे में मेरा यह विश्वास है कि वे सभी हिंदू थे। मैं सिक्ख धर्म को हिंदू धर्म से अलग नहीं समझता। मैं इसे हिन्दूवाद का ही अंग समझता हूं।" दूसरी तरफ़, सिक्खों का शुरू से ही विश्वास है कि वे अपने जन्म से ही स्वतंत्र हैं। कैप्टन मरे द्वारा पूछे गए एक सवाल के जवाब

में भाई रतन सिंघ (भंगू) बताते हैं कि सिक्खों को सत्ता श्री गुरु नानक देव जी ने प्रदान की थी।

२०वीं सदी के दौरान एक समय ऐसा भी आया जब समय की सरकार ने बाबा जरनैल सिंघ खालसा भिंडरांवाला, प्रमुख दमदमी टकसाल को निशाना बनाते हुए तथाकथित आतंकवादियों का प्रमुख एलाना। इसी साजिश के अधीन इंदिरा गांधी ने ३ जून, १९८४ ई. को हिंदुस्तानी फ़ौज के माध्यम से श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब पर यह कह कर हमला करवा दिया कि श्री दरबार साहिब के अंदर बाबा जरनैल सिंघ भिंडरांवाला सहित कई आतंकवादी छिपे हुए हैं। इसी दिन श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी गुरुपर्व भी था। गुरुपर्व मनाने के लिए सिक्ख संगत बड़ी संख्या में पहुँची हुई थी। ३ जून, १९८४ ई.को पूरे पंजाब में कर्फ़्यू लगा दिया गया। पंजाब को पूरी तरह से शेष राज्यों से तोड़ दिया गया। हिंदुस्तान के इतिहास में तो क्या, यह शायद पूरे एशिया के इतिहास में पहली मिसाल थी कि पचास हज़ार वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में कर्फ़्यू लगाया गया हो। इस कर्फ़्यू के दौरान पूरे पंजाब में सड़कों पर हर तरह के यातायात पर पाबंदी लगा दी गई। हैरानी की बात तो यह है कि इतने बड़े इलाके में ऐसा कर्फ़्यू भारत-पाक और भारत-चीन जंग के समय भी नहीं लगाया गया था। इतने बड़े क्षेत्र में कर्फ़्यू लगाना किसी पूर्वनियोजित साजिश के अधीन ही था।

श्री दरबार साहिब परिसर में उपस्थित संगत को फ़ौज ने किसी भी तरह की कोई चेतावनी दिए बिना गोलाबारी शुरू कर दी। निष्कर्षत: सैकड़ों बेकसूर श्रद्धालु सिक्ख शहीद कर दिए गए। लगातार तीन दिन यह गोलाबारी जारी रही, जिसके परिणामस्वरूप जो जानी, माली, धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक नुकसान हुआ और जो बेअदबी सिक्खों के महान केंद्र श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब व श्री अकाल तख़्त साहिब की हुई, वो कथन से बाहर की बात है।

जून, १९८४ ई. के दौरान भारतीय हुकूमत द्वारा श्री दरबार साहिब की गई बेअदबी का बदला लेने के लिए समकालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के अंगरक्षकों (भाई सतवंत सिंघ और भाई बेअंत सिंघ) ने उसे ३१ अक्तूबर, १९८४ ई. को ड्यूटी के दौरान गोलियों से भून दिया। देश के प्रधानमंत्री का कत्ल होना कोई छोटी बात नहीं थी। इंदिरा के कत्ल के बाद खासकर राजधानी दिल्ली तथा अन्य सिक्ख बहुसंख्या वाले राज्यों में सिक्खों को मारना-जलाना आरंभ हुआ। कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने शहर की गलियों-

बाज़ारों में स्थित लोगों को सिक्खों के ख़िलाफ़ भड़काया। सिक्खों की दुकानों को ढूँढ-ढूँढ कर लूटा गया, जलाया गया। सिक्खों की टैक्सियों में आग लगा दी गई। सिक्खों को घरों में से निकाल-निकाल कर मारा गया। उनके गले में टायर डाल कर उन्हें जिंदा जलाया गया, महिलाओं की इज्जत लूटी गई।

इस विकट घड़ी में नानकसर सम्प्रदाय ने नवंबर, १९८४ ई. में दिल्ली में हुए सिक्ख कत्ल-ए-आम के दौरान सिक्ख पीड़ितों को आश्रम में पनाह देने के साथ-साथ बड़ी संख्या में लंगर आदि का प्रबंध किया, जिसकी पूरी रिपोर्ट नागरिक एकता मंच द्वारा एक वर्ष बाद 'PUCL BULLETIN' ६ नामक मासिक समाचार पत्र में प्रकाशित हुई।

नवंबर, १९८४ ई. के दौरान सिक्खों के विरुद्ध दिल्ली तथा अन्य स्थानों पर बहुत ही भयानक और हृदयवेदक हिंसा भड़की, जिसने लोगों के मन पर इस कद्र छाप छोड़ी है कि आज ४० वर्ष बीत जाने के बाद भी उस दृश्य को लोग भूल नहीं सके। यह घोर अत्याचार का कृत्य था। इस घड़ी में सरकारी इशारों पर हज़ारों सिक्ख लोगों, जिनमें बुज़ुर्ग, जवान, बच्चे, माताएं, बेटियाँ-बहनें भी शामिल थीं, को बड़ी बेरहमी के साथ मार दिया गया। सैकड़ों लोगों पर तेल डाल कर, गले में टायर डाल कर जिंदा जला दिया गया। कईयों की अमानवीय मारपीट की गई। सभी निर्दोष लोगों के घर लूटे गए, तोड़फोड़ की गई, महिलाओं के साथ बलात्कार कर उन्हें सड़क पर या तो फेंक दिया गया या मार दिया गया।

आखिर यह सब कैसे शुरू हुआ ?

नानकसर आश्रम, दिल्ली के यमुना पार एक शांतमयी इलाके में स्थित है, जो वजीराबाद से एक फ़रलांग की दूरी पर स्थित है। आम हालात में, आश्रम केवल पवित्र रूहानी ज़रूरतें पूरी करता है, परंतु ३ नवंबर, १९८४ ई. की शाम को यह एक बड़े शरणार्थी कैंप में तबदील हो गया, जिसमें नंद नागरी, यमुना विहार, भजनपुरा, खज़ौरी कालोनी, गमरी, मौजपुर इलाकों से बिना घोंड के कुछ हिस्सों में से आग से सुलगते अपने घरों व मुर्दा पारिवारिक सदस्यों को घरों में छोड़ कर अनेक सिक्ख यहाँ पहुँचे।

यह बात अब निस्संदेह है कि उक्त वर्णित सिक्ख आबादी वाले इलाकों को पूर्वनियोजित और योजनाबद्ध ढंग से तबाह कर दिया गया था। ३१ अक्तूबर, १९८४ ई. की सायं को यमुना पार के स्थानीय स्तर के कांग्रेसी नेताओं ने अपने-अपने इलाकों में मीटिंग बुला कर अगली सुबह को दहशत फैलाने की तैयारियाँ मुकम्मल कर ली थीं।

इस सारी योजना के पीछे खज़ौरी-भजनपुरा (सी-ब्लाक) इलाके की पंचायत के चेयरमैन कादम सिंघ गुज्जर का हाथ था। कादम सिंघ ने ३१ अक्तूबर की रात को खज़ौरी गाँव में एक बैठक की, जिसमें इसने अगले दिनों में किये जाने वाले विनाश का निरीक्षण करने के लिए दस या इससे अधिक लोगों के ग्रुप बनाए।

बैठक के बाद उसके पुत्र अजीत राशनवाला और उसके एक साथी, जै सिंघ, जो कि मिट्टी के तेल का डीपू संचालक था और जिसकी खज़ौरी कालोनी मार्केट में दुकान थी, ने स्थानीय सिक्ख परिवारों की सूची तैयार की, ताकि अगली सुबह उन्हें लूटा और मारा जा सके। सूची बनाने की प्रक्रिया में इनकी पूरी तरह से मदद जन-कल्याण विद्यालय, भजनपुरा के प्रिंसिपल राजबीर ने की थी। उसने अपने स्कूल के रजिस्टर से सिक्खों के घर की पहचान की।

नानकसर आश्रम में शरणार्थियों और सिक्ख नेताओं की पहचान करने व उन्हें जलाने के लिए तेल की आपूर्ति करने में कांग्रेसी नेताओं और उनके गुंडों की भूमिका अहम रही।

१ नवंबर, १९८४ ई. की सुबह और कुछ क्षेत्रों में २ नवंबर को भी, कादम तथा जैन श्रीनगर सदन के मालिक टुंडा जैन, दोनों ने खज़ौरी कालोनी, गमरी व भजनपुरा में निवास कर रहे सिक्खों के एक-एक घर की निशानदेही कर उनके घर के बाहर श, य के रूप में निशान लगा दिए, ताकि उनके घरों को पहचान कर आग लगाई जा सके, लूटा जा सके और उन्हें कत्ल किया जा सके। यह सब कुछ दो घंटे के भीतर घटित होना शुरू हो गया था। बेशक १ से ३ नवंबर तक मिट्टी का तेल केवल डिपो से सीधा ही मिलता आ रहा था, परंतु फिर भी जय, गिरीश, कुलदीप और सज्जन ने गुंडा तत्वों के साथ मिल कर रिक्शा आदि के माध्यम से मिट्टी के तेल के पीपे ढोए।

वर्णनीय है कि कदीम ने तीनों दिन लाऊड स्पीकरों पर भड़काऊ भाषण दिए, जिसके आख़िरी बोल थे— ''जागते रहो! लूटते रहो! मारते रहो!'' इसके बाद जो कुछ घटित हुआ, वो कथन से बाहर की बात है। वो बहुत ही भयानक दहशत थी, जिस कारण २-३ दिन में ही नानकसर आश्रम में पनाह लेने वाले परिवारों में से १५५ लोगों की मृत्यु हो गई। यह संख्या एक छोटे-से स्थान पर पनाह लेने वाले लोगों की है, जिनका बड़ी बेरहमी के साथ कत्ल किया गया। मारे गए लोगों की बहुसंख्या आखिरकार जला दी गई थी। ज़िक्रयोग्य है कि पहले उन्हें घर से बाहर निकाला गया, फिर उन्हें उनकी अंतिम सांस तक पीटा गया, उनकी दाढ़ी और केश उखाड़े

गए, उन्हें गटर में धकेल दिया गया और फिर, जब कोई बेहोश हो जाता था तो उसे आग में फेंक दिया जाता था। यह सब कुछ महिलाओं और नाबालिग बच्चों के सामने किया गया था। जब उन्होंने अपने रिश्तेदारों को बचाने की कोशिश की तो उन्हें भी पीटा गया। सिक्ख पुरुषों की हत्या के बाद, गुंडों की भीड़ ने कई बालिग-नाबालिग लड़कियों के साथ बलात्कार भी किया।

नानकसर आश्रम में कुल ५०२ परिवारों ने शरण ली थी, जिनके सदस्यों की कुल संख्या लगभग ३००० - ३२५० के करीब थी। नागरिक एकता मंच के वलंटियरों ने इस बात की बड़ी प्रशंसा की कि कैसे नानकसर आश्रम के प्रमुख बाबा जी (नाम नामालूम) ने दो अन्य लोगों (श्री शर्मा तथा कनवल साहिब) और लगभग तीन दर्जन सेवादारों की मदद से बड़े लंगर का प्रबंध किया। उन काले दिनों में दूसरे कैंप समूहों के मुकाबले नानकसर आश्रम शायद भोजन-वितरण और पनाह देने में सर्वाधिक कुशल संस्था रही।

उक्त रिपोर्ट चाहे विस्तृत रूप में मिलती है, परंतु हमने लेख की सीमा को मुख्य रखते हुए केवल रिपोर्ट का तत्व-सार पेश किया है।

हवाले और टिप्पणियाँ :—

१. स. रतन सिंघ (भंगू), प्राचीन पंथ प्रकाश, भाई वीर सिंघ साहित्य सदन, नई दिल्ली, २००५, पृष्ठ ४२.

२. Joginder Singh, The Bharat Mata Sabha, The Punjab and Present, Punjabi University, Patiala, April 1984, p.208.

३. Ibid, p.74.

४. *The Collected Works of Mahatma Gandhi,* Vol. 28, 1968, p. 263.

५. स. रतन सिंघ (भंगू), श्री गुर पंथ प्रकाश, (संपा.) डॉ. बलवंत सिंघ (ढिल्लों), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २००४, पृष्ठ ७.

६. श्री जय प्रकाश नारायण जेपी) ने पब्लिक यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज़ एंड डेमोक्रेटिक राइट्स (पी. यू. सी. एल. एल. आर.) की स्थापना १९७६ ई. में की थी। यह एक राजनैतिक विचारधारा से मुक्त संगठन है, जो सिविल लिबर्टी और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए वचनबद्ध है। यह संस्था विभिन्न राजनैतिक पार्टियों से सम्बन्धित लोगों को एक संयुक्त प्लेटफार्म पर इकठ्ठा करने के लिए यत्नशील है। और अधिक जानकारी के लिए देखें :— http://www.pucl.org.

७. गुरमुख सिंघ, संखेप तवारीख : गुरुद्वारा नानकसर, आनंद पुस्तक भंडार, जगराउं (लुधियाना), पृष्ठ १७०.

८. महान कोश, पृष्ठ ६९२.

९. *PUCL BULLETIIN,* (Vol. 5, No. 2), February 1985.

बर्बरता में कोई किसी से कम नहीं!

*-डॉ. महीप सिंघ**

नवंबर, १९८४ में दिल्ली तथा अन्य कितने ही स्थानों पर सिक्खों का जो कत्लेआम हुआ था, उसके बारे में एक प्रसिद्ध राजसी नेता ने तब मुझे एक बात बतायी थी कि २ नवंबर वाले दिन जब दिल्ली में जगह-जगह पर सिक्खों को बड़ी बेरहमी के साथ मारा जा रहा था, उनके घरों-दुकानों को आग लगाई जा रही थी, तब उस (नेता) ने तत्कालीन गृह मंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव को फ़ोन किया और कहा, ''राव साहिब! दिल्ली में बेगुनाह सिक्ख मारे जा रहे हैं। उनके घरों को आग लगाई जा रही है। आप कुछ करते क्यों नहीं?'' गृह मंत्री का जवाब था— ''आप बिल्कुल चिंता मत करो! तीन-चार दिन यह सब चलने दो, उसके बाद हम सब संभाल लेंगे!''

४० वर्ष पूर्व केंद्र सरकार ने दंगाइयों को सिक्खों की ज़िंदगियों के साथ खेलने की कुछ दिनों की छूट दे दी थी। इसी प्रकार २२ वर्ष पूर्व तत्कालीन गुजरात की सरकार ने अपने राज्य में मुसलमानों के नरसंहार की लोगों को खुली छूट दे दी थी। १०५ वर्ष पूर्व श्री अमृतसर में अंग्रेज़ों से देश को आज़ाद कराने की मुहिम में सक्रिय कुछ लोगों ने सरकारी इमारतों को नुकसान पहुँचाया था और एक ईसाई मिशनरी औरत के साथ मारपीट की थी। जनरल डायर ने उसका बदला लेने के लिए जलियांवाला बाग़ में सैकड़ों आदमियों को मौत के घाट उतार दिया था। यह है नरसंहार की राजनीति। इसे सबक सिखाने की राजनीति कहना और अधिक उचित है। जनरल डायर हिंदुस्तानियों को सबक सिखाना चाहता था। राजीव गांधी भी सिक्खों को सबक सिखाना चाहता था। सबक सिखाने की राजनीति वही कर सकता है जिसके पास पुलिस हो, फ़ौज हो, सरकारी ताकत हो। ईरान के बादशाह नादिर शाह ने हिंदुस्तान पर हमला कर दिल्ली पर कब्ज़ा कर लिया। दिल्ली के कुछ लोगों ने उसके कुछ सिपाहियों के साथ बदसलूकी कर दी। बस, नादिर शाह ने दिल्ली निवासियों को सबक सिखाने की ठान ली। उसने कत्लेआम का हुक्म दे दिया। उसके सिपाहियों ने कुछ घंटों में ही दिल्ली के हज़ारों व्यक्तियों के लहू के

**एच-१०८, शिवाजी पार्क, नई दिल्ली— ११००२६*

साथ अपनी तलवारें रंग लीं।

बदले की भावना के साथ की गई हत्याएं हमारे गाँवों-शहरों में आम घटनाएं हैं। जब एक-दो या इससे अधिक आदमी मिल कर दूसरे पक्ष के कुछ आदमियों को बदले की भावना के साथ मार देते हैं तो वह हत्या होती है। जब कुछ लोगों की भीड़ बेकसूर, अनजान आदमियों को मारने का इरादा कर लेती है तो वह कत्लेआम या नरसंहार होता है। इसे 'बर्बरता' कहा जा सकता है। मानव इतिहास हत्याओं के साथ भी भरा पड़ा है और बर्बरता के साथ भी। बर्बरता अपने साथ बहुत-सी दलीलें ढूँढ लेती है। हिटलर ने यहूदियों के साथ जो सलूक किया था, उसके बारे में उसकी दलील थी कि यहूदी ईसाईअत के दुश्मन हैं। उनका ख़ून शुद्ध आर्य ख़ून नहीं है। धरती पर उनका जीना धरती के लिए बोझ है। रूस के तानाशाह स्टालिन ने असंख्य लोगों को कत्ल कराया था और यह संतोष प्रकट किया था कि उसने 'कम्यूनिज़म' की सेवा की है।

इसलाम के विस्तार के साथ कत्लेआम का सम्बन्ध सदियों पुराना है। तैमूर लंग ने सन् १३९८ में सिंधु नदी पार कर हिंदुस्तान पर हमला किया था। ऐसे हमलावरों के समक्ष चार मुख्य बातें होती थीं— लूटो, जलाओ, मारो और ग़ुलाम बनाओ! तैमूर ने भी यही किया। अपने आक्रमणों के समय उसने हज़ारों लोगों की जान ली और बड़ी संख्या में लोगों को ग़ुलाम बनाया। एक समय उसके पास एक लाख से अधिक हिंदू कैदी हो गए थे। जब वह दिल्ली को लूट कर वापस जाने लगा तो उसने सभी कैदियों के कत्ल का हुक्म दे दिया यह कहते हुए कि वह काफ़िरों को सजा दे रहा है। कुछ दिनों में ही सभी कैदियों को मौत के घाट उतार दिया गया। काबुल से फौज लेकर आए बाबर के ज़ुल्मों की कहानी के श्री गुरु नानक साहिब खुद गवाह हैं। उसके सिपाहियों की बर्बरता का जिक्र गुरु साहिब जी ने अपनी बाणी में भी किया है। उसके ज़ुल्मों से न हिंदू बचे न मुसलमान।

बर्बरता की पृष्टभूमि में मुख्य रूप से दो बातें काम करती नज़र आती हैं। एक है— अपनी प्रभुता, अपनी हुकूमत, अपनी सल्तनत के विस्तार की भावना। चंगेज ख़ान ने अगर मंगोलिया से चल कर तुर्की तक अपनी हुकूमत का परचम लहराया तो उसके पीछे प्रभुता की लालसा थी। इस लालसा की तृप्ति के लिए उसकी फ़ौज जहाँ-जहाँ से भी गुज़रती थी, लूट, तबाही और मानव-तबाही का मंजर खड़ा कर देती थी, मगर उसका अपना कोई धार्मिक अकीदा नहीं था। उसके पूर्वज बौधी थे। उसके बाद आए हलाकू ख़ान और तैमूर, इसलाम कबूल कर चुके थे।

दुनिया में इसलाम के प्रचार का मुखौटा उनके आक्रमणों का बड़ा सहायक बन गया। तथाकथित काफ़िरों का कत्लेआम करना उन्हें पुण्य लगने लगा।

यह भी सत्य है कि दुनिया में धर्म के नाम पर जितनी कत्लोगारत हुई है, उतनी राज-सत्ता के लिए नहीं हुई। कुछ भारतीय इतिहासकारों ने लिखा है कि वैदिक धर्मियों ने इस देश में बड़ी संख्या में बौधियों का नरसंहार किया था। मध्य युग में यूरोप में ईसाई अदालतें होती थीं, जिन्हें 'इनक्यूजिशन' (inquisition) कहा जाता था। जो व्यक्ति कट्टर ईसाई नियमों के साथ कुछ मतभेद रखते थे या ईसाई धर्म-गुरुओं द्वारा बनाए नियमों के ख़िलाफ़ कुछ करते थे, उन्हें पकड़ कर लाया जाता था और उस अदालत के आगे पेश किया जाता था। ऐसे लोगों को 'हेरेटिक' (धर्म-द्रोही) कहा जाता था। उन्हें जिंदा जला देने की सजा दी जाती थी। कई बार ऐसा भी होता था कि जब धर्म-द्रोहियों पर मुकद्दमा चल रहा होता था, कट्टरपंथी व्यक्तियों की भीड़ जेलों के दरवाज़े तोड़ कर उन्हें जबरन बाहर निकाल लाती थी और सभी को मौत के घाट उतार देती थी।

ये बातें मध्ययुगीन हैं। हम मानते हैं कि आज का मानव पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बुद्धिमान हो गया है। मगर मानव पहले की अपेक्षा ज्यादा सहनशील और उदार हुआ है, ऐसा कहीं नज़र नहीं आता। बर्बरता, निर्दयता और अंध-धार्मिकता में वह मध्ययुगीन लोगों को मात देता है। केवल ७७ वर्ष पूर्व देश-विभाजन के समय यहाँ बर्बरता का जो नंगा नाच हुआ था, उसे कौन भुला सकता है? शिकागो (अमेरिका) में सितंबर १८९३ में हुए अंतर्राष्ट्रीय सर्वधर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द ने मध्य युग की ईसाई अदालतों की कारगुज़ारी का जिक्र करते हुए बड़े फ़ख़्र के साथ कहा था— ''एक धर्मांध हिंदू चाहे जलती हुई चिता पर चढ़ कर अपने आप को जला दे, मगर वह दूसरे धर्म के मानने वाले को जलाने के लिए कभी आग नहीं जलाएगा। अगर आज वे होते और देखते कि जिनके बारे में उन्होंने बड़े फ़ख़्र के साथ यह दावा किया था, उन्होंने १९८४ ई. में बेगुनाह सिक्खों को उनके गले में जलते हुए टायर डाल कर कैसे जलाया था! १९९२ ई. में गुजरात में हुए उपद्रव के समय उपद्रवियों ने अहमदाबाद के एक बहुमंजिला मकान को आग लगा दी थी, जिसमें रहने वाले सभी मुसलमान जल कर राख हो गए थे।

जिन्होंने बिहार में विभिन्न जातियों में होने वाली हिंसक घटनाओं के विवरण पढ़े हैं, वे जानते हैं कि एक ख़ास वर्ग के लोग जब दूसरे वर्ग के किसी गाँव पर हमला करते हैं तो न

केवल उनकी हत्या करते हैं, बल्कि बर्बरता की सारी हदें पार कर जाते हैं। हमलावर उस वर्ग के लोगों का पेट फाड़ कर उनकी अंतड़ियां बाहर निकाल देते हैं, औरतों की छातियाँ काट कर दीवारों पर चिपका देते हैं। हम सबके मन में यह सवाल उठ सकता है कि आज का मानव समाज सभ्यता की तरफ बढ़ रहा है या हिंसा और बर्बरता की नई हदों को छू रहा है!

मध्ययुमीन और आधुनिक बर्बरता में एक अंतर अवश्य है। मध्य युग के बर्बर राजा, सुलतान हमलावर एवं तानाशाह होते थे। अपनी कारगुज़ारियों के लिए वे किसी के आगे जवाबदेह नहीं होते थे। आधुनिक युग में लोकतंत्र के उभार के साथ राजसत्ता में आम लोगों का दख़ल बढ़ गया है और तानाशाह लोगों को प्रजा के आगे जवाबदेह होना पड़ता है। चाहे इस युग में भी हिटलर, मुसोलिनी, स्टालिन और ईदी अमीन जैसे सत्ताधारियों ने लोगों के साथ अपनी बर्बरता का खेल खेलने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी, मगर लोगों की आलोचना से वे नहीं बच सके। ऐसे तानाशाह बुरी मौत मरे या अंतर्राष्ट्रीय अदालतों में उन पर मुकद्दमे चले। इराक के सद्दाम हुसैन जैसों को फांसी भी लग गई। सबसे अधिक शर्मनाक और चिंता की बात यह है कि अगर लोकतंत्र में लोगों द्वारा चुनी हुई सरकारों के अगुआ बदले की भावना के साथ किसी एक वर्ग को उकसा कर, दूसरे वर्ग के बेकसूर लोगों पर हमले कराएं, उनका बेरहमी के साथ सामूहिक कत्लेआम कराएं और दोषी लोगों को कानून की पकड़ में आने से बचाने का यत्न करें तो उनमें और मध्ययुगीन तानाशाहों में कोई अंतर नहीं रहेगा। लोकतंत्रीय शासन को न्याय का शासन कहा जाता है, जहां सभी नागरिकों को एक जैसे हक मिलते हैं, सबको एक-सा इन्साफ मिलता है। यह कैसी न्याय-प्रणाली है जो इंदिरा गांधी तथा जनरल वैद्या का कत्ल करने वाले दोषियों को फांसी पर तो लटका देती है मगर हज़ारों बेगुनाहों का कत्लेआम करने या कराने वाले दोषियों को सड़कों पर खुलेआम घूमने व ऊँची पदवियों पर पहुँचने की इजाज़त दे देती है? दिल्ली और गुजरात में यही कुछ हुआ। न्याय की हत्या भी किसी बर्बरता से कम नहीं।

सिक्खी के प्रचार और प्रसार में धर्म प्रचार कमेटी का योगदान

*-स. बलविंदर सिंघ काहलवां**

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की १९३१ ई. की साधारण सभा में धर्म प्रचार कमेटी बनाने की तजवीज़ रखी गई और १ अप्रैल, १९४५ ई. को धर्म प्रचार कमेटी अस्तित्व में आई। जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की साधारण चुनाव होता है तो उसमें धर्म प्रचार कमेटी के सात सदस्य नामज़द होते हैं। ये सदस्य सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित बुद्धिजीवी व्यक्ति होते हैं, जिनकी सात सदस्यीय कमेटी चुनी जाती है। इस कमेटी की धर्म प्रचार के कार्यों हेतु विभिन्न सभाएं आयोजित की जाती हैं। इसमें सिक्खी के प्रचार-प्रसार के अलावा सिक्ख धर्म को प्रफुल्लित करने के लिए विचार-विमर्श किया जाता है। वास्तव में धर्म प्रचार कमेटी का मुख्य उद्देश्य है सिक्खी का प्रचार-प्रसार करना।

मुख्य कार्य : सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए तीन जोन (संभाग) बनाए गए हैं— माझा, दोआबा और मालवा। इनके अलग-अलग सब-आफिस खोले गए हैं, जो कि मुख्य कार्यालय के साथ जुड़े हुए हैं। इन सब-आफिसों के माध्यम से प्रचारक, कवीशर और ढाडी साहिबान अपने-अपने क्षेत्रीय सदस्यों के सहयोग से अपने-अपने क्षेत्रों में गुरमति समागमों का आयोजन करते हैं। ये एक प्रकार से प्रचार लहर के रूप में कार्य करते हैं, जिसके अंतर्गत ढाडी, प्रचारक, कवीशर साहिबान दस-दस, पंद्रह-पंद्रह दिन लगातार गाँवों, कसबों आदि में सिक्खी का प्रचार-प्रसार करते हैं और संगत को अमृत-पान करने के लिए प्रेरित करते हैं। जब इन गुरमति समारोहों की समाप्ति होती है तो अंतिम दिन अमृत-संचार समारोह आयोजित किया जाता है। गत समय में आयोजित विभिन्न समारोहों के दौरान ६५ हज़ार से अधिक प्राणी अमृत-पान कर गुरु वाले बने है। इसके साथ-साथ गाँवों के गुरुद्वारा साहिबान की माँग पर कथावाचक, ढाडी साहिबान, प्रचारक साहिबान आदि भी धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से भेजे जाते हैं। अमृत-संचार के दौरान धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से अमृत-अभिलाषियों को भेटा-रहित (नि:शुल्क) ककार प्रदान किए जाते हैं। इसके अलावा विभिन्न गाँवों-कसबों आदि के गुरुद्वारा साहिबान या संगत की तरफ से गुरमति समारोह आयोजित करवाने हेतु यदि किसी आवश्यक सामग्री आदि की माँग

*सचिव, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब— १४३००१, फोन : ९८७६०-०४७००

धर्म प्रचार कमेटी से की जाती है तो कमेटी की तरफ से वह सामान भी मुहैया करवाया जाता है, जिसमें टैंट, शमियाना, बर्तन, लंगर आदि का सामान होता है। ऐसी किसी भी प्रकार की सेवा धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से भेटा-रहित दी जाती है। इसके अलावा धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से संगत को हर प्रकार के गुरमति समारोहों पर आवश्यक वस्तुएँ मुहैया करवाने के अतिरिक्त सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित भेटा-रहित लिट्रेचर भी मुहैया करवाया जाता है, ताकि संगत अपने गौरवमयी इतिहास से परिचित हो सके। संगत अपने स्तर पर जो गुरमति समारोह अपने इलाके में करवाना चाहती है वह सीधे रूप से अपना माँग-पत्र धर्म प्रचार कमेटी के पास भेज सकती है।

धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए १२ से १५ समारोह प्रतिदिन विभिन्न स्थानों पर आयोजित किये जा रहे हैं। इन समारोहों के अंतर्गत श्री अकाल तख़्त साहिब से पाँच प्यारे साहिबान की ड्यूटी अमृत-संचार के लिए लगाई जाती है।

धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई जाती है। संगत की माँग को मुख्य रखते हुए सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित एक चित्र-प्रदर्शनी का भी विशेष रूप से प्रबंध किया गया है। जहाँ कहीं विशेष गुरमति समारोह होते हैं, वहाँ यह चित्र-प्रदर्शनी विशेष रूप से धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से लगाई जाती है, जैसे गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे की शताब्दी समारोह के अवसर पर गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर और गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे से सम्बन्धित चित्र-प्रदर्शनी लगाई गई थी। इस दौरान अपने इतिहास के बारे में पढ़कर, उसे देखकर संगत काफ़ी भावुक होती नज़र आई।

संस्थाएं : सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए और धर्म-प्रचार के लिए धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से रागी, ढाडी, कथावाचक, प्रचारक साहिबान के प्रशिक्षण के लिए १७ मिशनरी कॉलेज, गुरमति विद्यालय, गुरमति इंस्टीट्यूट संचालित किए जा रहे हैं, जिनमें से से ६ मिशनरी कॉलेजों में ३ वर्षीय डिप्लोमा कोर्स करवाया जाता है। इनमें पुरातन रागों के अनुसार कीर्तन करने वाले रागी, तबलावादक, प्रचारक आदि प्रशिक्षित किये जाते हैं। इन मिशनरी कॉलेजों ने सिक्ख पंथ को नामवर सिक्ख चिंतक, रागी, प्रचारक, ग्रंथी, राजनीतिवेत्ता आदि प्रदान किए हैं, जैसे ज्ञानी साधू सिंघ भौरा जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब, सिंघ साहिब ज्ञानी साहिब सिंघ, सिंघ साहिब ज्ञानी सोहन सिंघ, सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, सिंघ साहिब ज्ञानी हरप्रीत सिंघ जत्थेदार तख़्त श्री दमदमा साहिब, ज्ञानी शरम सिंघ पूर्व जत्थेदार तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, सिंघ साहिब ज्ञानी मनजीत सिंघ पूर्व जत्थेदार तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, सिंघ साहिब ज्ञानी केवल सिंघ पूर्व जत्थेदार तख़्त श्री दमदमा

साहिब के तौर पर सेवा निभा चुके हैं। ज्ञानी बादल सिंघ, ज्ञानी फौजा सिंघ, ज्ञानी ईशर सिंघ बसाली, ज्ञानी गुरबख़्श सिंघ, सरदार अमर सिंघ दुसांझ, ज्ञानी हरचरन सिंघ हुडिआरा, ज्ञानी केहर सिंघ बैरागी, ज्ञानी जंग सिंघ, ज्ञानी शंकर सिंघ, ज्ञानी गहिल सिंघ भलाई, ज्ञानी साहिब सिंघ 'चमक', ज्ञानी मनजीत सिंघ 'दादर', ज्ञानी गुरबचन सिंघ 'चांद', ज्ञानी निरंजन सिंघ यू. के., ज्ञानी त्रिवेदी सिंघ यू. के., ज्ञानी अनूप सिंघ यू. एस. ए., ज्ञानी गुरमुख सिंघ हाँगकाँग, भाई गुरदास सिंघ, ज्ञानी तारा सिंघ कनाडा आदि ने प्रचारक के रूप में सिक्ख धर्म के प्रचार हेतु सेवा निभाई है। इसके अलावा इन कॉलेजों से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों ने भारतीय फ़ौज में धार्मिक अध्यापक/ ग्रंथी के तौर पर भी सेवा निभाई है। इनमें कैप्टन सोहण सिंघ डोरा, स. अमोलक सिंघ, स. केवल सिंघ दुसांझ, स. तिरलोचन सिंघ लक्खूवाल, ज्ञानी हरजाप सिंघ, स. राजिंदर सिंघ पुण्छी, सूबेदार लखविन्दर सिंघ ठरू, सूबेदार दमोदर सिंघ, सूबेदार मुखतार सिंघ गग्गोबूआ, सूबेदार सुखराज सिंघ तामकोट, सूबेदार सतविंदर सिंघ 'जोगर' आदि प्रमुख हैं। ज्ञानी प्रीतम सिंघ सरली ने आज़ाद हिंद फ़ौज में सेवा निभाई। ज्ञानी अजीत सिंघ अम्बालवी ने 'गुरमति प्रकाश' के संपादक के रूप में कार्य किया।

इन कॉलेजों के कुछ विद्यार्थी देश में विभिन्न उच्च पदों पर विराजमान रहे, जैसे ज्ञानी जैल सिंघ राष्ट्रपति भारत, ज्ञानी लाल सिंघ पंजाब पब्लिक सर्विस कमिशन, डायरेक्टर भाषा विभाग तथा अन्य उच्च पदों पर तैनात रहे। जत्थेदार ईशर सिंघ मझैल, ज्ञानी अमर सिंघ दुसांझ आदि ने पंजाब मंत्रालय में मंत्री पद पर सेवा की। इसके अलावा डॉ. बलकार सिंघ पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, डॉ. गुरनाम सिंघ पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, डॉ. केहर सिंघ, पंजाब सरकार, प्रो. कुलवंत सिंघ खालसा कॉलेज श्री अमृतसर साहिब, प्रो. हरिभजन सिंघ खॉलसा कालेज श्री अमृतसर साहिब स. गुरबख़्श सिंघ इन्फर्मेशन आफिसर, ज्ञानी भरपूर सिंघ उप सचिव, प्रो. जगजीत सिंघ ठीकरीवाल गुरमति कॉलेज पटियाला, स. साधू सिंघ हमदर्द, प्रो. पिआरा सिंघ पद्म, ज्ञानी लाभ सिंघ आदि प्रसिद्ध शख्यितों के नाम वर्णनीय हैं।

बहुत-से विद्यार्थियों ने गुरमति संगीत क्लास में प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत रागी के रूप में विभिन्न धर्म-स्थानों पर सेवा निभाई। इन रागी सिंघों में प्रिं. बलदेव सिंघ 'दिल्ली वाले', भाई सतिनाम सिंघ 'सेठी', भाई हरदित्त सिंघ पुण्छ, भाई गुलाब सिंघ, ज्ञानी अजीत सिंघ, भाई दिलबाग सिंघ, भाई मनमोहन सिंघ रकाबगंज, ज्ञानी संतोख सिंघ ऑस्ट्रेलिया, भाई जंग सिंघ, भाई जनक सिंघ कनाडा, भाई सुरजीत सिंघ सेवापंथी

(रोहतक), भाई अमर सिंघ, प्रिं. बलदेव सिंघ, भाई हरनाम सिंघ, भाई निरमल सिंघ खालसा, भाई रविंदर सिंघ, भाई सुरिंदर सिंघ 'जोधपुरी', भाई हरजिंदर सिंघ श्रीनगर वाले, भाई सतनाम सिंघ कुहाड़का, भाई कुलदीप सिंघ आदि के अलावा बहुत-से रागी जत्थे हजूरी रागी श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब तथा देश-विदेश में कीर्तन की सेवा निभा रहे हैं। इस लेख के लेखक को इस बात का फख्र है कि उसे भी इस गौरवमयी संस्था के कॉलेज गुरु काशी गुरमति इंस्टीट्यूट, तलवंडी साबो में रह कर विद्या हासिल करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पंजाब के अलावा विभिन्न राज्यों में धर्म प्रचार कमेटी के १२ मिशन सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य कर रहे हैं, जैसे कि :—

१. सिक्ख मिशन जम्मू-कश्मीर

२. सिक्ख मिशन हिमाचल प्रदेश

३. सिक्ख मिशन हरियाणा (कुरुक्षेत्र)

४. सिक्ख मिशन दिल्ली

५. सिक्ख मिशन उत्तर प्रदेश (हापुड़)

६. सिक्ख मिशन काशीपुर उत्तराखंड (काशीपुर)

७. सिक्ख मिशन गुरजरात (अहमदाबाद)

८. सिक्ख मिशन छत्तीसगढ़ (रायपुर)

९. सिक्ख मिशन पश्चिमी बंगाल (कलकत्ता)

१०. सिक्ख मिशन आंध्रा प्रदेश, (विशखापट्टनम)

११. सिक्ख मिशन नेपाल (काठमांडू)

१२. गुरमति प्रचार केंद्र, राजस्थान (बुड्ढा जोहड़)

यहाँ प्रचारक, रागी, ढाडी धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से पक्के तौर पर मुहैया करवाए गए हैं, जो कि समाज में सिक्खी का प्रचार-प्रसार लगातार कर रहे हैं।

इन सभी मिशनों का सारा व्यय धर्म प्रचार कमेटी वहन करती है। इसके साथ स्थानीय संगत का सहयोग भी लिया जाता है।

विद्या के क्षेत्र में कैंप-आयोजन : धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से जो गुरमति कॉलेज, इंस्टीट्यूट संचालित किए जाते हैं, उनके अध्यापक साहिबान के कैंप लगा कर उन्हें इस सम्बंधी अवगत कराया जाता है कि उनके द्वारा विद्यार्थियों को सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए कैसे तैयार करना है। इस कार्य के लिए सिक्ख कौम के बड़े विद्वानों और यूनिवर्सिटियों के प्रोफ़ेसर साहिबान का सहयोग लिया जाता है, ताकि उनकी विद्वता का लाभ बच्चे सुगमता से उठा सकें।

इसी तरह १०-१२ धार्मिक अध्यापकों के दल (ग्रुप) बना कर विभिन्न गाँवों में जाकर बच्चों को गुरमति से परिचित करवाने का प्रयास भी किया जाता है। ऐसे प्रयासों के अंतर्गत १५-१५ दिवसीय जो कैंप गाँवों में आयोजित किए जाते हैं उनके लिए संगत की तरफ से सकारात्मक स्वीकृति मिलती है। जब १५ दिन का कैंप समाप्त हो जाता है तो संगत

की तरफ से इन कैंपों को और लम्बा करने के लिए धर्म प्रचार कमेटी को सूचित किया जाता है। ऐसे में हमारे मन को और प्रसन्नता हासिल होती है।

इसके अलावा विगत समय के दौरान धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से माझा, मालवा और दोआबा ज़ोन में समर कैंपों का आयोजन किया गया। सन् २०२३ की गर्मी की छुट्टियों के दौरान माझा जोन में १५२ कैंपों का आयोजन किया गया, जिनमें ६२३३ विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इनमें से ५९९७ विद्यार्थियों ने अमृत-पान किया, जो कि हमारी महान प्राप्ति है। ख़ास कर सामाजिक बुराइयों वाले वर्तमान दौर में बच्चों को गुरमति की तरफ प्रेरित करना अपने आप में बड़ी प्राप्ति है।

इसी तरह मालवा जोन में १५० कैंप आयोजित किए गए हैं, जिनमें ४१२५ विद्यार्थियों ने अमृत-पान किया है। इसी तरह दोआबा जोन में ३३ गुरमति कैंप आयोजित किए गए, जिनमें कुल ३२९३ विद्यार्थियों ने अमृत-पान किया।

अन्य कार्य : सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए धर्म प्रचार कमेटी द्वारा करवाए जाते अनेक कार्यों में धार्मिक परीक्षा का आयोजन भी करवाया जाता है, जिसमें लाखों की संख्या में स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों की दर्जावार परीक्षा ली जाती है। इसमें पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर आने वाले विद्यार्थियों को वज़ीफा भी प्रदान किया जाता है। माता साहिब कौर गर्ल्स कॉलेज, श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व सिक्ख यूनिवर्सिटी श्री फतहगढ़ साहिब में क्रमश: २५० और १०० विद्यार्थियों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए धार्मिक साहित्य, जो कि भेटा-रहित और भेटा-सहित रूप में प्रकाशित किया जाता है, संगत में वितरित किया जाता है। संगत को घर बैठे गुरमति की जानकारी मुहैया करवाने के लिए दो मासिक पत्रिकाएं— 'गुरमति प्रकाश' (पंजाबी) और 'गुरमत ज्ञान' (हिंदी) प्रकाशित किये जाते हैं। इसके साथ ही संगत से हमारा निवेदन है कि वह धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को अपना सहयोग प्रदान करे और अपने सुझाव हमें लिखित रूप में या मौखिक रूप में प्रदान करे! हम सबका नैतिक कर्त्तव्य है कि हमारे पूर्वजों की असंख्य कुर्बानियों और लम्बे संघर्ष के बाद वजूद में आई इस संस्था को हर पक्ष से उन्नत बनाने के लिए प्रयत्नशील हों।

अकाली मोर्चे : सैद्धांतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

*-सतविंदर सिंघ फूलपुर**

गुरुद्वारा साहिबान को संगती प्रबंधाधीन लाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब द्वारा लगाए गए मोर्चों का अद्वितीय इतिहास है। इस लेख में हम मोर्चों के सैद्धांतिक और ऐतिहासिक पहलुओं के बारे में बात करेंगे।

'मोर्चा' फ़ारसी मूल के दो शब्दों— 'मूरचाल' और 'मूरचाना' का संयुक्त पंजाबी रूप है। फ़ारसी-पंजाबी कोश के अनुसार 'मूरचाल' के अर्थ हैं— किले के गिर्द खोदा गया गड्ढा या खाई और 'मूरचाना' के अर्थ हैं— छोटी चींटी, तुच्छ, कमज़ोर।[१] पंजाबी कोशों में इन दोनों शब्दों के लिए एक ही शब्द 'मोर्चा' इस्तेमाल किया गया है, जिसके प्राप्त अर्थ हैं— जंग, पर्दा, झगड़ा, दाग़, चींटी, कीट आदि।[२] हिंदी कोशों में जंग और मैल के संदर्भ में 'मोर्चा' शब्द के अर्थ किये गए हैं— लोहे पर चढ़ने वाला वह काला अंश, जो हवा और नमी के प्रभाव से उत्पन्न होता हो; जंग शीशे, दर्पण आदि पर जमी हुई मैल।[३]

गुरबाणी में भी 'मोर्चा' शब्द जंग, ज़र या मैल के अर्थों में चार बार आया है :

— जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६६६)

— कहु नानक मोरचा गुरि लाहिओ
तह गरभ जोनि कह आवै।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९७८)

— इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै।।
मोरचा ना लागै जा हउमै सोखै।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११५)

— भइओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा
अनमोल पदारथु लाधिओ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३०)

साधारणतया इसके अर्थ हैं— किले की दीवार या मेड़ आदि में बनाया गया छेद, जिसमें से दुश्मन पर तीर-गोली आदि चलाई जाये। शत्रु के शस्त्रों से बचाव के लिए खोदा गया गड्ढा और खाई, जिसमें सिपाही छिप कर बैठते और दुश्मन पर वार करते हैं।[४]

'पंजाबी-अंग्रेज़ी कोश' के अनुसार 'मोर्चा' शब्द के अंग्रेज़ी में समानार्थी शब्द हैं — Trench, fortification, military position, battle front, agitation, political movement etc.[५]

उपरोक्त में से शब्द 'Agitation' 'मोर्चा'

**संपादक। फोन : ९९१४४-१९४८४*

शब्द के साथ कुछ निकटकता के भाव तो प्रकट करता है मगर पूर्ण रूप से सिक्ख मोर्चों के लिए उपयुक्त शब्द नहीं है। कुछ विद्वानों ने इसे 'मोर्चा' शब्द की जगह इस्तेमाल किया है, परन्तु दोनों शब्दों के अर्थ को गहराई के साथ समझने पर इनके मध्य सूक्ष्म अंतर स्पष्ट हो जाता है। 'Agitation' के अंग्रेज़ी कोशों में अर्थ मिलते हैं— Public protest in order to achieve political change, worry and anxiety that you show by behaving in a nervous way. To make other people feel very strongly about something so that they want to help you achieve it.[६] अर्थात् लोगों की वह चिंता, डर, फ़िक्र, परेशानी, व्याकुलता, जिसे लोग बेचैन होकर, बौखलाहट व उत्तेजना में आकर प्रकट करें। ऐसी बौखलाहट व उत्तेजना हमेशा अशांति और दंगा-फ़साद पैदा करने का कारण बनती है। दूसरा, एजीटेशन में किसी उद्देश्य-पूर्ति के लिए दूसरे लोगों को दृढ़ करवाया जाता है ताकि वे इसकी सफलता के लिए आपकी मदद करना चाहें।

'मोर्चों' में सिक्ख स्वेच्छा के साथ, शांतचित्त होकर गुरुधामों की पवित्रता की ख़ातिर उत्साहपूर्वक कुर्बानी करने के लिए जाते हैं, फिर सामने से चाहे लाठियां बरसें, गोलियाँ चलें, वे गुरु साहिबान के पवित्र वचन *''तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई''* के अनुसार मरना स्वीकार करते हैं। फिर वो माता, जिसका गोद में उठाया दूध पीता बच्चा दुश्मन की गोली लगने से शहीद तो हो जाता है, मगर वो पीछे नहीं हटती, अपने बच्चे को धरती पर रख कर गुरुधामों की पवित्रता की ख़ातिर कुर्बान होने के लिए पुनः मोर्चे में शामिल हो जाती है। मोर्चों में सिंघ दुश्मन के आक्रमण को देख कर घबराते नहीं, उत्तेजना में आकर अशांति नहीं फैलाते, बल्कि जब्र का सब्र के साथ सामना कर शहादत प्राप्त कर जाते हैं। प्रसिद्ध लिखारी और ईसाई प्रचारक सी. एफ. एंड्रयो, गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे के समय अंग्रेज़ पुलिस आफिसर बी. टी. द्वारा सिक्खों पर ढाया जा रहा तशद्दुद अपनी आंखों से देखा था, वो लिखता है कि सिक्ख बिल्कुल हज़रत ईसा मसीह की भांति शांतमयी रह कर जब्र का मुकाबला करते हैं। उनका यह कर्त्तव्य अति प्रशंसनीय है।

इस प्रकार सिक्ख तवारीख में सिक्ख संघर्ष के समय 'मोर्चा' शब्द जिन विस्तृत अर्थों में इस्तेमाल किया गया है उसके हू-ब-बू प्रासंगिक भाव प्रकट करने वाला शब्द अंग्रेज़ी भाषा में नहीं मिलता, इसलिए अधिकांशतः अंग्रेज़ी रचनाओं में 'मोर्चा' शब्द का लिप्यंतरण कर 'Morcha' ही लिखा मिलता है और इसके अर्थ किये मिलते हैं— एक ही स्थान पर बैठे एक ही फ़ैसले को मनवाने के लिए स्थिर और अचल साधन या अपनी माँगों को मनवाने के लिए किसी एक ही सिद्धांत पर अडिग रह कर

बैठ जाना और विरोधी के साथ शांतमयी टक्कर लेना।[७] इस संदर्भ में 'मोर्चा' शब्द पहली बार सिक्ख इतिहास में 'आंदोलन' या 'सत्याग्रह' के अर्थ में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के समय प्रचलित हुआ, जब गुरुद्वारों की आज़ादी के लिए सिक्ख जत्थे शान्तिपूर्वक कार्यवाही करने के बदले जेलों में जाते रहे।[८]

सिक्ख मोर्चों की सफलता के कारण राजनैतिक पार्टियों द्वारा यह शब्द शांतमयी आंदोलनों के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा, जैसे किसान मोर्चा, हिंदी मोर्चा, पटवारी मोर्चा आदि। धीरे-धीरे इस शब्द का प्रयोग हिंदी भाषायी इलाकों में आंदोलनों या जत्थेबंदियों के लिए होने लगा, जैसे जन मोर्चा, लोकहित मोर्चा, झारखंड मुक्ति मोर्चा आदि।[९]

अब 'मोर्चा' शब्द पंजाबी सभ्याचार में इतना ज़्यादा प्रसिद्ध हो चुका है कि प्रत्येक कार्य की सफलता से सम्बन्धित मोर्चे के अनेक मुहावरे प्रचलित हो चुके हैं, जैसे मोर्चा लगाना, मोर्चा गाड़ना, मोर्चा मारना, मोर्चा संभालना, मोर्चा जीतना, मोर्चा फतह करना इत्यादि।

सिक्ख मोर्चों का आरंभ गुरुद्वारों को महंतों के कब्ज़े से आज़ाद करवाने के साथ हुआ। गुरुद्वारों के साथ सिक्खों के गहरे सम्मानजनक सम्बन्ध सिक्खों की चढ़दी कला का प्रकटीकरण हैं। अंग्रेज़ सरकार ने पंजाब पर कब्ज़ा करते ही सोच लिया था कि सिक्खी के प्रेरणा-स्रोत और महान केंद्र गुरुद्वारों पर कब्ज़ा करना पूरे सिक्ख संसार पर काबू पाना है, इसलिए अंग्रेज़ों ने कूटनीतिक चाल चलते हुए महंतों के माध्यम से गुरुद्वारों में समूह ब्राह्मणी रीति-रिवाज, वर्ण-विभाजन, जात-पांत के भेदभाव और छुआ-छूत का प्रवेश करवा दिया, ताकि सिक्खों का विश्वास कमज़ोर हो सके और इनके सामर्थ्य में गिरावट आ सके। दुराचारी महंतों ने गुरुद्वारों को अंग्रेज़-शासन की सुरक्षा, मज़बूती के लिए उनकी ख़ुशामद-केंद्र व अपने लिए दुराचार के अड्डे बना दिया था। अरदास में भी अंग्रेज़-सत्ता की सलामती और ख़ुशहाली की माँग की जाती थी। सिक्ख अपने गुरुधामों की ऐसी दशा देख कर इसे किसी कीमत पर भी सहन करने के लिए तैयार नहीं थे। वे हर हाल में गुरुद्वारों को संगती प्रबंध में लाना चाहते थे।

प्रिं. तेजा सिंघ लिखते हैं कि सिक्खों के पास गुरुद्वारों को महंतों के कब्ज़े से आज़ाद करवाने के लिए तीन साधन थे— असहयोग, लोक राय का दबाव और मुकद्दमे। (There were three ways open to sikhs to carry out reform in their temple; boycott, pressure of public opinion and litigation)[10]

सिक्खों ने सर्वप्रथम Charitable and Religious Indowment act (act xiv 1920) के अंतर्गत अदालत के माध्यम से अपने धार्मिक स्थानों का प्रबंध महंतों से वापस लेने के लिए काफ़ी जब जद्दोंजहद की, मगर महंतों

के सिर पर सरकार का हाथ होने के कारण अदालतों ने भी सिक्खों की कोई मदद न की।[११] गुरुद्वारों के प्रबंध में हस्तक्षेप कर उन्हें अपने अधीन रखना और अपनी सत्ता की मज़बूती के लिए इस्तेमाल करना ही अंग्रेज़ सरकार की मुख्य नीति थी। इस बात का पता पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर आर. ई. एजर्टन द्वारा ८ अगस्त, १८८१ ई. को हिंद के वाईसराय को लिखे पत्र से चलता है, जिसमें उसने यह सुझाव दिया था कि गुरुद्वारों के प्रबंध से सम्बन्धित अंग्रेज़ सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई नीति में कोई परिवर्तन न किया जाए।[१२]

जब कानून ने भी कोई मदद न की तो सिक्खों के पास गुरुद्वारों पर जबरन कब्ज़ा करने के सिवा और कोई चारा न रहा। कई स्थानों पर सिक्ख कुछ गुरुद्वारों के प्रबंध पर कब्ज़ा करने में सफल हो गए, परन्तु सरकार ने सिविल नोटिफिकेशन जारी कर इसे रद्द कर दिया।[१३]

फिर सिक्खों ने अपने आप को स्थानीय अकाली जत्थों के रूप में संगठित कर शांतमयी आंदोलन को अपना हथियार बना लिया और गुरुद्वारों के प्रबंध-सुधार के लिए मोर्चे लगाने शुरू कर दिए। ये जत्थे किसी केंद्रीय जत्थेबंदी के अधीन न होने के कारण अलग-अलग इलाकों में बँटे हुए थे। किसी मज़बूत केंद्र की अनुपस्थिति के कारण ये अपने स्थान की सफलता में पूर्ण रूप से सक्षम नहीं हो सकते थे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब के वजूद में आने से सिक्खों की बिखरी हुई शक्ति 'हन्ने हन्ने मीरी' एकजुट होकर मज़बूत केंद्र का रूप धारण कर गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के फ़ैसले समूचे सिक्ख पंथ के फ़ैसले समझे जाने लगे। इस प्रकार मोर्चों की सक्रियता और तेज़ हो गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने मोर्चों में पंचम और नवम पातशाह के पदचिन्हों पर चलते हुए, अकाल पुरख का आदेश मानते हुए सत्ताधारी सरकार का बिना विरोध किये हर प्रकार का अत्याचार सह कर, शहादत प्राप्त करते हुए गुरुद्वारों का प्रबंध पंथक हाथों में लाने का संकल्प लिया और व्यभिचारी महंतों के कुकर्मों की मैल को अपने ख़ून से धोकर मोर्चों का अद्वितीय इतिहास सृजित किया।

एक अन्दाजे के अनुसार इन मोर्चों में दो हज़ार से अधिक सिंघ-सिंघनिओं ने अपनी जान दी और इतनी ही संख्या में सिक्खों ने बी. टी. की लाठियां खाईं। पचास हज़ार से अधिक अकाली वीरों ने जेल की काल कोठरियों में यातनाएं सहन कीं, अपनी जायदाद तबाह करवाई। सोलह लाख से अधिक की राशि कौम को जुर्माने के तौर पर भरनी पड़ी।[१४]

इन मोर्चों की सफलता ने न केवल गुरुद्वारों को ही महंतों के कब्ज़े से आज़ाद करवाया बल्कि देश की आज़ादी के लिए नई राहें सृजित कर लोगों में धर्म और देश-प्रेम के लिए मर मिटने का जज़्बा भी पैदा किया,

अतएव 'चाबियों का मोर्चा' की सफलता पर बधाई देते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि यह देश की आज़ादी के लिए पहली निर्णायक लड़ाई की विजय है।

यहाँ हम कुछ ऐतिहासिक मोर्चों के बारे में संक्षिप्त रूप से चर्चा कर रहे हैं :—

गुरुद्वारा चुमाला साहिब का मोर्चा : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से सम्बन्धित ऐतिहासिक गुरुद्वारा चुमाला साहिब, लाहौर में सुस्थित है। गुरुद्वारा चुमाला साहिब (पातशाही छठी) लाहौर के महंत हरी सिंह ने गुरुद्वारे में गुरमति विरोधी गतिविधियों का माहौल बना रखा था। सराय के सभी कमरे उसने मीट बेचने वाले बूचड़ों को दे रखे थे। खालसा प्रचारक जत्थे ने उसकी कार्यवाहियों के विरुद्ध २१ अगस्त, १९२० ई. को एक मीटिंग बुलाई। महंत ने औरतों से हमला करवा कर मीटिंग में बाधा उत्पन्न की। २२ अगस्त को प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान और लेखक स. सरदूल सिंघ कवीशर व उसके साथियों ने गुरुद्वारे में दीवान सजा कर संगत को गुरुद्वारे के हालात से अवगत कराया। २७ सितंबर, १९२० ई. को सिक्खों ने इकठ्ठा होकर गुरुद्वारे के प्रबंध हेतु १२ सदस्यीय समिति गठित की। पंजाब के ख़ुफ़िया विभाग के एक प्रमुख अधिकारी वी. डब्ल्यू. स्मिथ द्वारा २२ फरवरी, १९२० ई. को बर्तानवी सरकार को भेजी एक रिपोर्ट में भी इसका ज़िक्र है कि सिक्खों ने सर्वप्रथम कब्ज़ा गुरुद्वारा चुमाला साहिब पर ही किया था।[१५]

गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब का मोर्चा : अंग्रेज़ सरकार ने वाईसराय की दिल्ली स्थित कोठी का मार्ग सीधा करने के लिए १९१४ ई. में गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की दीवार का कुछ हिस्सा गिरा दिया जिस पर सिक्खों में सरकार के ख़िलाफ़ भारी आक्रोश पैदा हुआ। १९१४ ई. में ही प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने के कारण गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब के मोर्चे का संघर्ष धीमा पड़ गया। सितंबर, १९२० ई. में स. सरदूल सिंघ कवीशर द्वारा एक सौ सिंघों का जत्था ले जाकर दीवार के पुनर्निर्माण की तजवीज़ पर अनेक सिंघों ने अपने नाम पेश किये और एक दिसंबर, १९२० ई. को सौ सिंघों के इस जत्थे ने दीवार का पुनर्निर्माण करना था, परंतु सरकार ने इससे पहले ही दीवार बना दी। इस तरह गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की दीवार का मोर्चा सफल हो गया।[१६]

मोर्चा गुरुद्वारा भाई फेरू जी : भाई फेरू जी का गुरुद्वारा गाँव मीएं के मौड़, तहसील चूहणियां, ज़िला लाहौर में स्थित है। २१ दिसंबर, १९२२ ई. को महंत किशन दास ने चार सौ रुपए महीना लेना मान कर २८ दिसंबर को गुरुद्वारे का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब को सौंप दिया। कुछ देर बाद वह समझौते से मुकर गया और गुरुद्वारे के मैनेजर पर मुकद्दमा दायर कर दिया। ७ दिसंबर, १९२३ ई. को पुलिस ने मैनेजर तथा

दस अन्य सिंघों को गिरफ़्तार कर लिया। डिप्टी कमिशनर लाहौर ने गुरुद्वारे की ज़मीन का इंतकाल शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नाम कर दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ज़मीन का कब्ज़ा लेना चाहा। महंत ने पुलिस की मदद माँगी। पुलिस ने ३४ अकालियों आदि को २ जनवरी, १९२४ ई. को गिरफ़्तार कर लिया। ५ जनवरी, १९२४ ई. को गुरुद्वारा भाई फेरू जी में मोर्चा लग गया। प्रतिदिन २५ सिंघों का जत्था जाकर गिरफ़्तारी देता। छः हज़ार से अधिक गिरफ़्तारियाँ हुईं। २० सितंबर, १९२५ ई. को गुरुद्वारा भाई फेरू जी में एक ख़ून हो जाने के कारण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने मोर्चा खत्म कर दिया। तत्पश्चात् गुरुद्वारा कानून बन जाने पर जायदाद का झगड़ा समाप्त हो गया तथा गुरुद्वारा प्रबंध और ज़मीन का कब्ज़ा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब को मिल गया।[१७]

डसका का मोर्चा : सियालकोट के नगर डसका में भाई वरिआम सिंघ का गुरुद्वारा है। वहाँ के प्रबंध से सम्बन्धित कुछ समय से हिंदुओं और सिक्खों में झगड़ा चला आ रहा था। गुरुद्वारे का प्रबंध सिक्खों के पास था और दुकानें हिंदुओं के पास थीं। सिक्खों ने हिंदुओं से दुकानों का कब्ज़ा लेने की कोशिश की, मगर वे अदालती ढंग से सफल न हो सके। इस पर बाबा खड़क सिंघ, प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब ने मोर्चा लगाने का एलान कर दिया और १७ अगस्त, १९३१ ई. को २५ सिंघों का जत्था लेकर जेल चले गए। ४ अक्तूबर, १९३१ ई. को मास्टर तारा सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का जनरल इजलास बुला कर समूह सदस्यों को गुरुद्वारे के सम्मान के लिए कुर्बानी कर पंथ का नेतृत्व करने की अपील की। मास्टर तारा सिंघ ने अपने जत्थे सहित गिरफ़्तारी दी।[१८] इसके बाद बाकायदा जत्थे जाने लगे। गुरुद्वारे से सम्बन्धित सालसी फ़ैसला हुआ . . . । इस फ़ैसले को सभी ने स्वीकार कर लिया और मोर्चा फतह हो गया।

कृपाण की आज़ादी का मोर्चा : हिंदुस्तान के शस्त्र अधिनियम के अनुसार बिना लाइसेंस या बिना उसकी छूट के कोई भी अपने पास शस्त्र नहीं रख सकता था, इसलिए सिक्खों के कृपाण पहनने पर भी पाबंदी लगा दी गई। सिक्खों ने कृपाण रखने की आज़ादी के लिए मोर्चा शुरू कर दिया। हज़ारों सिक्खों को शस्त्र अधिनियम का उल्लंघन करने के कारण जेल भेजा गया। कृपाण बनाने वाली फ़ैक्टरियों पर छापे मारे गए। इस मोर्चे के हक में प्रचार करने के लिए १९२२ ई. में 'कृपाण बहादुर' नामक साप्ताहिक पत्रिका जारी की गई, जिसके संपादक स. सेवा सिंघ ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोक राय बनाने में रचनात्मिक भूमिका निभाई। तीन फुट लंबी कृपाण रखने के कारण पकड़े गए सिक्खों को 'कृपाण

बहादुर' का ख़िताब दिया जाने लगा। सन् १९२२ में सरकार तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मध्य समझौता हो गया और कृपाण रखने पर लगी पाबंदी ख़त्म कर दी गई। इसके साथ ही कृपाण का मोर्चा ख़त्म हो गया।[१९]

पंजाबी सूबा मोर्चा : देश-विभाजन के बाद भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की बात चली। पंजाबी भाषा के आधार पर पंजाबी सूबा (राज्य) की स्थापि के प्रति केंद्र सरकार का रवैया नकारात्मक देखते हुए मास्टर तारा सिंघ द्वारा १० मई, १९५४ ई. को जत्थे सहित गिरफ़्तारी देकर 'पंजाबी सूबा मोर्चा' आरंभ कर दिया गया। विभिन्न उतराव-चढ़ाव से गुज़रता हुआ, ऐतिहासिक निशान छोड़ता हुआ १ नवंबर, १९६६ ई. को पंजाबी सूबा बन जाने से यह मोर्चा फतह हो गया। इस मोर्चे में सत्तावन हज़ार से अधिक सिक्ख जेल गए और कुछ शहीद भी हुए।

हवाले और टिप्पणियाँ :

१. डॉ. राजिंदर सिंघ (संपा.), फ़ारसी-पंजाबी कोश, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९९६, पृष्ठ ६६८

२. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, नेशनल बुक शाप, १९९८, पृष्ठ ९९९.

३. श्री नवल जी (संपा.), नालंदा विशाल शब्द सागर, न्यू इम्पीरियल बुक डिपो, नई सड़क, देहली, पृष्ठ ११२८

४. महान कोश, उक्त।

५. एस. एस. (जोशी) (सम्पा.), पंजाबी- अंग्रेज़ी कोश, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९७४, पृष्ठ ७३६

६. *Oxford Dictionary,* (English to English and English to Hindi), p. 30, 26

७. स. बखशी सिंघ आदिल, अकाली मोर्चा १९८२, नवीन प्रकाशन, श्री अमृतसर साहिब, १९९०, पृष्ठ १३

८. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विश्व कोश, भाग द्वितीय, गुर रत्न पब्लिशर्स, पटियाला, २००५, पृष्ठ १४६०

९. Harbans Singh (Ed.), *The Encyclopedia of Sikhism,* Punjabi University Patiala, 1997, p. 123

१०. Teja Singh, *The Gurdwara Reform : Movement and the Sikh Awakening,* Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib,1984, p. 61

११. Mohinder Singh, The Akali Movement, National Institute of Punjab Studies, New Delhi, 1997, p.17

१२. डॉ. गंडा सिंघ, गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर १९२०-१९२५, एकादमी ऑफ सिक्ख रिलीजन एंड कल्चर, ढिल्लों मार्ग, पटियाला, १९७८, पृष्ठ ७

१३. Mohinder Singh, opp. p.18

१४. 'दो शब्द' स. गुरचरन सिंघ टौहड़ा, ज्ञानी प्रताप सिंघ, गुरुद्वारा सुधार अकाली लहर, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, १९७५, पृष्ठ ८

१५. डॉ. कुलवंत सिंघ (बाजवा) (संपा.), अकाली दल सच्चा सौदा बार, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २०००, पृष्ठ १०

१६. डॉ. गंडा सिंघ, उक्त, पृष्ठ १०

१७. स. सोहन सिंघ जोश, अकाली मोरचिआं दा इतिहास, नवयुग पब्लिशर्स, दिल्ली, १९७२, पृष्ठ ३८८

१८. स. शमशेर सिंघ अशोक, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी दा ५० साला इतिहास, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, १९९८, पृष्ठ १०४

१९. सिक्ख पंथ विश्व कोष, भाग प्रथम, पृष्ठ ५०५

कविता

श्री गुरु नानक देव जी

*-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी**

नानक नाम क्रांति सूरज, जब चमका ननकाणे में।
हर अंधियारे जेहन में हलचल, मच गयी कुल ज़माने में।
दूजे का हक छीन के खाना, ताकत से महरूम करे,
लेकिन बेहद ताकत तो है, हक-हलाल की खाने में।
ईमांदारी रब की पूजा, कह कर की थी नानक ने,
सदियों से है चमक रही जो, अब तक मोदीखाने में।
दुनिया के इतिहास में बाबा नानक हैं तन्हा जिसने,
सारी उम्र लगा दी रोते हुओं को चुप कराने में।
हर इक भूले-भटके राही को समझाया तर्क से ही,
होती रही हैं जमा दलीलें, नानक तेरे खज़ाने में!
दर्दमन्दों के दर पर दस्तक, मकसद दर्द बँटाना था,
कोसों लंबा सफर है शामिल, दर्द के दाग मिटाने में।
कर्मकाण्ड भी एक रुकावट, है भगवान के रस्ते में,
यह है रस्ते का पत्थर जो, चुभता आने-जाने में।
शक्ल किसी भी मूर्ति की, भगवान की शक्ल से मिले नहीं,
सच्चे रब की नहीं है पूजा, इसको फूल चढ़ाने में।
धर्म इसलाम को मानने वाला, 'वली कंधारी' मस्त हुआ,
आया नज़र खुदा उसको तो, 'नानक' के मुस्काने में।
गुरु नानक ने सुर के माहिर को बनाया दिल अपना,
'मरदाना' ने जन्म लिया, संगीत के एक घराने में।
हम सब नक्श-ए-पा नानक पर, शीश झुकाते हैं 'पंछी',
जिसने वहीदी फूल खिलाये, जीस्त के हर वीराने में।

*जेठी नगर, मालेर कोटला रोड, खन्ना— १४१४०१ (जिला लुधियाना), फोन : ९४१७०-९१६६८

ख़बरनामा

सिक्ख नौजवान के साथ दुर्व्यवहार करने वाले पुलिस अधिकारी के विरुद्ध उत्तराखंड सरकार करे कार्रवाई : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २० सितम्बर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने उत्तराखंड के जिला ऊधम सिंघ नगर के रुद्रपुर शहर की आदर्श कालोनी पुलिस चौकी के इंचार्ज की तरफ से जांच के नाम पर सिक्ख नौजवान सरदार जसदीप सिंघ के साथ दुर्व्यवहार करने और उसके ककारों का अपमान करने का सख़्त नोटिस लेते हुए पुलिस अधिकारी के ख़िलाफ़ कठोर कार्रवाई की माँग की है। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि यह बेहद दुखदायी और ग़ैर-जिम्मेदाराना हरकत है, जिसने सिक्ख भावनाओं को ठेस पहुंचाई है। एडवोकेट धामी ने कहा कि पिछले कुछ समय से भारत में अल्पसंख्यकों और ख़ास कर सिक्खों के साथ नफरती व्यवहार की घटनाएँ सामने आ रही हैं। कुछ सांप्रदायिक मानसिकता वाले लोग ऐसी हरकतें कर सामाजिक भाईचारे को भी नुकसान पहुंचाते हैं, जो देश-हित में नहीं है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि पुलिस का काम लोगों की सुरक्षा करना है, परन्तु जब कोई पुलिस अधिकारी जानबूझ कर एक ख़ास भाईचारे के नौजवान के साथ गलत ढंग से पेश आता है तो यह दुर्भाग्यपूर्ण है। एडवोकेट धामी ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री से माँग की कि सम्बन्धित पुलिस अधिकारी के विरुद्ध तुरंत कार्रवाई की जाये।

सिक्ख फ़ौजी अधिकारी की लड़की पर हमले के दोषी पुलिस कर्मचारियों के विरुद्ध हो सख़्त कार्रवाई : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २१ सितम्बर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने ओडिसा में भुवनेश्वर के एक पुलिस थाने में सिक्ख फ़ौजी अधिकारी की लड़की पर किये गए हमले की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए सरकार से दोषी पुलिस कर्मचारियों के ख़िलाफ़ कठोर कार्रवाई करने की माँग की है। एडवोकेट

धामी ने कहा कि देश में औरतों के साथ कई दुखदायी घटनाएँ घट रही हैं, परन्तु सरकारें इसकी तरफ गंभीरता के साथ ध्यान नहीं दे रही। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर वायरल हुई एक वीडियो के माध्यम से सामने आई जानकारी के अनुसार देश की रक्षा करने वाले फ़ौजी अधिकारी की वकील बेटी, पीछा कर रहे उपद्रवी व्यक्तियों से बचने के लिए पुलिस थाने में जाती है, और पुलिस के कर्मचारी ही उसके साथ दुर्व्यवहार करने पर उतारू हो जाते हैं, जो बहुत गंभीर मामला है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि पुलिस प्रशासन का काम लोगों की जान-माल की सुरक्षा करना होता है, परंतु जब पुलिस कर्मचारी अपनी ड्यूटी निभाने की बजाय फ़रियाद लेकर आए लोगों को ही ज़लील करने लगें तो इंसाफ़ कहाँ से मिलेगा? उन्होंने कहा कि फ़ौजी देश की सुरक्षा के लिए सीमा पर ड्यूटी निभा रहे हैं और उनके परिवार के साथ ऐसी घटना का घटित होना सरकार के लिए और भी शर्मसार करने वाली बात है। एडवोकेट धामी ने ओडिसा सरकार को सम्बन्धित पुलिस कर्मचारियों के ख़िलाफ़ तुरंत कठोर कार्रवाई करने के लिए कहा। उन्होंने भारत के गृहमंत्री श्री अमित शाह को भी इस मामले में हस्तक्षेप करने की माँग करते हुए कहा कि ऐसे दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम को रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ, क्योंकि अक्सर ही देखने में आता है कि देश में सिक्खों के साथ ना-इन्साफ़ी बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि दोषियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई के लिए केंद्रीय गृहमंत्री राज्य सरकार को निर्देश जारी करें।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने सिक्ख मसलों को लेकर मेघालय के राज्यपाल के साथ की मुलाकात

श्री अमृतसर साहिब : २६ सितम्बर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के एक शिष्टमंडल ने मेघालय के राज्यपाल श्री सीएच विजयशंकर से मिल कर शिलांग में पंजाबी कालोनी में स्थित गुरुद्वारा गुरु नानक दरबार का मसला तुरंत हल करवाने के लिए हस्तक्षेप करने की माँग की। शिष्टमंडल ने मेघालय सरकार के मुख्य सचिव श्री डोनाल्ड फिलिप्स वाहलैंग के साथ मुलाकात कर शिलांग के सिक्खों के मसले हल करने के साथ-साथ गुरुद्वारा साहिब को तोड़ने की कार्यवाही तुरंत रोकने के लिए माँग-पत्र सौंपा था। इसी

श्रृंखला में ही आज मेघालय के राज्यपाल के साथ मुलाकात की गई।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल का नेतृत्व कर रहे महासचिव भाई राजिंदर सिंघ महिता ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने मेघालय के राज्यपाल को शिलांग में गुरु-घर की तोड़फोड़ करने की कार्यवाही तुरंत रोकने के लिए सरकार को दिशा-निर्देश जारी करने के लिए कहा है। भाई महिता ने कहा कि शिलांग की पंजाबी कालोनी में बसे सिक्ख परिवारों के घरों का मसला लंबे समय से चल रहा है और अब गुरुद्वारा साहिब की तोड़फोड़ के निर्देश जारी होने पर स्थानीय सिक्खों में आक्रोश व्याप्त है। उन्होंने राज्यपाल से माँग की कि मेघालय सरकार को हिदायत जारी कर स्थानीय सिक्खों के अधिकारों की सुरक्षा को सुनिश्चित बनाया जाये।

राज्यपाल के साथ मुलाकात करने वाले शिष्टमंडल में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई राजिंदर सिंघ महिता के साथ सदस्य एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, अपर सचिव स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल के अलावा शिलांग स्थित गुरुद्वारा गुरु नानक दरबार के प्रधान स. गुरजीत सिंघ, सेवा शिलांग सिक्खस संस्था के कनवीनर प्रोफ़ेसर जगमोहन सिंघ शामिल थे।

दशम पातशाह के प्रति अपमानजनक शब्दावली बोलने वाले व्यक्ति को दी जाये सख़्त सज़ा : एडवोकेट धामी

.श्री अमृतसर साहिब : २६ सितम्बर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने श्री फ़तहगढ़ साहिब ज़िले के गाँव कमाली के वरिंदर सिंघ नामक व्यक्ति द्वारा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति अपमानजनक शब्दावली बोलने का गंभीर संज्ञान लेते हुए पंजाब सरकार से दोषी के ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई करने की माँग की है। उन्होंने यह भी कहा कि पंजाब में पिछले कुछ समय से लगातार श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी और सोशल मीडिया पर गुरु साहिबान के प्रति अपमान की घटनाएँ घटित हो रही हैं, इसलिए सरकार इन मसलों को गंभीरता के साथ लेते हुए ऐसे शरारती तत्वों के पीछे काम कर रही शक्तियों को भी सार्वजनिक करे। उन्होंने पंजाब सरकार को इस मामले में दोषी व्यक्ति के ख़िलाफ़ सख़्त सजा सुनिश्चित किए जाने के लिए भी कहा।

एडवोकेट धामी ने कहा कि ऐसी घटनाएँ जहाँ समूचे सिक्ख जगत की धार्मिक भावनाओं को गहरी चोट पहुंचाती हैं, वहीं ये पंजाब के माहौल में कड़वाहट भी पैदा करती हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने दशम पातशाह के प्रति अपमानजनक शब्द बोलने वाले व्यक्ति के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करवाने वाले सिक्खों की भी प्रशंसा की और यह वचनबद्धता व्यक्त की कि सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी इस मसले में उनके साथ हर स्तर पर खड़ी है। उन्होंने कहा कि दोषी व्यक्ति को सख़्त सज़ा दिलाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा हर संभव सहयोग दिया जायेगा। उन्होंने सरकार से कहा कि इस मामले में किसी प्रकार की ढील न की जाये और मिसाली कार्रवाई की जाये, ताकि भविष्य में कोई भी ऐसी घटिया हरकत करने की हिम्मत न करे।

शहीद भाई हरजिंदर सिंघ जिंदा और भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा की बरसी मनाई गई

श्री अमृतसर साहिब : ९ अक्तूबर : सिक्ख कौम के महान शहीद भाई हरजिंदर सिंघ जिंदा और भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा की बरसी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा श्री दरबार साहिब परिसर में स्थित गुरुद्वारा झंडा बुंगा साहिब में मनाई गई। इस अवसर पर श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हज़ूरी रागी भाई बलदेव सिंघ ने गुरबाणी-कीर्तन किया, अरदास भाई प्रेम सिंघ ने की और पवित्र हुकमनामा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी राजदीप सिंघ ने श्रवण करवाया।

इस अवसर पर सिंघ साहिब ज्ञानी राजदीप सिंघ ने कहा कि भाई हरजिंदर सिंघ जिंदा और भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा राष्ट्रीय शहीद हैं, जिन्होंने कौम की ख़ातिर शहादत प्राप्त की है। उन्होंने कहा कि इन सिंघों द्वारा कौमी जज्बे की ख़ातिर दी गई शहादत को कौम हमेशा याद करती है। श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के अवसर पर शहीदों के पारिवारिक सदस्यों में से भाई भुपिंदर सिंघ, बीबी कुलवंत कौर, भाई सतवंत सिंघ उपस्थित थे, जिन्हें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से गुरु-बख्शिश सिरोपायो प्रदान किए गए।

पंथक कवि स. तेजा सिंघ साबर की १९४७ ई. में लिखी कविता
नवंबर १९८४ के संदर्भ में सरकारी शह पर सिक्खों का
खुराखोज मिटाने की इच्छा रखने वाली ताकतों को मुखातिब कर रहे हैं।

असीं मुर्दा नहीं, पए जीने आं!

अज्ज की होइया जे ज़ालम ने, मासूम असाडे मारे ने!
इह सिंघ उदों ही जित्ते ने, जद सभ कुझ आपणा हारे ने!
इह मुड्ढों साडी खीणी ए, असां कर्जे ओदों उतारे ने!
जद मात-पिता ते बच्चे लै, सिक्खी दे उत्तों वारे ने!
इह रब्ब ई साडा जाणदा ए, असीं दन्द किवें पए पीहने आं!
गिण-गिण के बदले लैणे ने, असीं मुर्दा नहीं, पए जीने आं!
इह दुनियां ताईं भुलेखा ए, असीं ओह नहीं रहे जो अग्गे सां!
मुड्ढों ही असीं चवाती तों, बण के भांबड़ मग्गे सां!
वैरी नूं ओवें लैणा ए, जिवें मुग़लां पिच्छे लग्गे सां!
असीं मौत कोलों घबरांदे नहीं, धोखे नाल जांदे ठग्गे सां!
असीं दिल हां तेग बहादर* दा, ते कलग़ीधर दे सीने आं!
इह दुनिया इक दिन देखेगी, असीं मुर्दा नहीं, पए जीने आं!
राजनीती दे पिड़ अन्दर, कदी धोखे दी, कदी दाबे दी!
इतिहास वी साडा दस्सदा ए, कदी चाचे दी, कदी बाबे दी!
इन्साफ हुणे ई होणा सी, जे लां ना टुट्टदी छाबे दी!
खुल्ह हुण वी जेकर मिल जावे, कीमत पै जाए खराबे दी!
की होइया 'साबर' बणके ते, पए गिणदे असीं महीने आं!
जद मौका मिलिआ दस्सांगे, असीं मुर्दा नहीं, पए जीने आं!

*श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

November 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब बाबा दीप सिंघ जी शहीद, श्री अमृतसर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-11-2024